समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

जून २००४ ♦ वर्ष ५४ ♦ अंक ६ ♦ एक प्रति १० रुपए ♦ वार्षिक १०० रुपए

मारवाड़ी समाज की उभरती नई छवि श्री रामनिवास मिर्धा

अ. भा. मा. सम्मेलन द्वारा वरिष्ठ नेता व भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री राम निवास मिर्धा व राजस्थान विधानसभा की अध्यक्षा श्रीमती सुमित्रा सिंह के सम्मान समारोह में बायें से श्री प्रकाश चन्द्र अग्रवाल, श्री रामनिवास मिर्धा, श्री मोहनलाल तुलस्यान, श्रीमती सुमित्रा सिंह, श्री भानीराम सुरेका, श्री सीताराम शर्मा व श्री नन्दकिशोर जालान।

'नई सरकार नई उम्मीदें' पत्रकारों की नजर में

बायें से - सर्वश्री विश्वम्भर नेवर, रामअवतार गुप्ता, सीताराम शर्मा, मोहनलाल तुलस्यान, शैलेन्द्र, ओमप्रकाश अश्क एवं भानीराम सुरेका।

With best compliments from

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Exporters & Manufacturer of Sponge-Iron

RUNGTA HOUSE
Chaibasa – 833 201
Jharkhand, India
Phone: (06582) 256861,256761, 256661
Cable: Rungta
Fax : 91-6582-256442
E-mail : rungtas@satyam.net.in
Website:http://www.rungtamines.com

Mines Division :

Barajamda – 833 221
Dist. Singhbhum (W)
Jharkhand, India
Phone : (06596) 262221, 262321
Fax: 91 – 6596 – 262101
Cable : Rungta

Regd. Office:

8A, Express Tower
42A, Shakespeare Sarani
Kolkata – 700 017, India
Phone : 033 - 2281 6580, 22813751
Fax : 91-33- 2281 5380
E-mail : rungta_cal@sify.com

Sponge –Iron Division

Main Road,
Barbil – 758 035
Dist. Keonjhar
Orissa, India
Phone : (06767) 276891
Telefax : 91- 6767- 276891

इस अंक में

अनुक्रमणिका	३
जनवाणी	४
सम्पादकीय	५
काम होता नहीं, / आचार्य विष्णुकांत शास्त्री	६
काम होता नहीं, होनहार (कवितायें), मालवीय जी का राज	६
अध्यक्ष की कलम से / *श्री मोहनलाल तुलस्यान*	७
घर-घर की कहानी / *श्री भानीराम सुरेका*	८
सम्मेलन इतिहास के पन्नों से / *श्री नन्दकिशोर जालान*	९
गजल / सुख-दुख की सौगात (कविताएं)	१०
मातृभूमि के अनन्य सपूत महाराणा प्रताप व भामा शाह / *श्री जुगल किशोर जैथलिया*	११
तृष्णा की विश्व परिक्रमा / *डा. तारादत्त निर्विरोध*	१४
रिश्ता (कविता)	१४
म्है म्हारो सुहाग मिटावण न चाहूं / *श्री मीठालाल खत्री*	१५
वे अल्पसंख्यक क्यों / *श्री घनश्याम देवड़ा*	१७
नारी स्वतंत्रता : सीमायें एवं उपयोग / श्री भीमसेन त्यागी	१८
एक भारतीय विश्वमानव बने / *श्री गिरधारीलाल सराफ*	१९
क्षणबोध / नया समाज - *कविताएं*	२०
कॉफी के कप के सान्निद्ध में / *श्री बुधमल शामसुखा*	२१
सज्जनता का काढ़ा / गजल	२२
देवर्षी नारद की धरती यात्रा / श्री रामनारायण उपाध्याय	२३
म्हारे देस / मेघ - *कविताएं*	२४

युग पथ चरण

★ श्री राम निवास मिर्धा का स्वागत नई सरकार - पत्रकारों की दृष्टि सुप्रीम कोर्ट के नये न्यायाधीश

★ प.बंगाल के सांसद मोहम्मद सलीम

★ प्रादेशिक सम्मेलन, अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन एवं मारवाड़ी युवा मंच तथा अन्य संस्थाओं की महत्वपूर्ण रिपोर्टें।

२५-३४

समाज विकास

जून, २००४

वर्ष ५४ ● अंक ६

एक प्रति- १० रु.

वार्षिक- १०० रु.

समाज विकास

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
२. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
३. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
४. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
५. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
६. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
७. भारत के कोने-कोने में फैले हुए ९ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
८. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु

ग्राहक बनिये / बनाइये
लिखिये / लिखाइये

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७, फोन : २२६८-०३११ के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इलस्ट्रेटेड इंडिया प्रेस, ७४, लेनिन सरणी, कोलकाता-७०००१३ में मुद्रित।

संपादक-नंदकिशोर जालान

ज न वा णी

इस स्तम्भ के अंतर्गत सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विषयों पर पाठकों के मतों का स्वागत है। साथ ही समाज के आंतरिक एवं गहन विषयों तथा समाज विकास में प्रकाशित सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव भी आमंत्रित है। - *सम्पादक*

रंग-बिरंगे एवं आकर्षक आवरण पृष्ठ से युक्त 'समाज-विकास' अप्रैल अंक पाकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। प्रकाशित सामग्री रूचिकर, पठनीय मननीय एवं सराहनीय लगी। सम्पादकीय एवं अध्यक्ष की कलम द्वारा व्यक्त विचारों ने काफी प्रभावित किया। सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री तुलस्यान की 'व्यवस्था में आमूल परिवर्तन की सोच' बिल्कुल उचित है। प्रकाशित समस्त आलेख सारगर्भित एवं काफी प्रभावशाली है। कविताएं हृदय-स्पर्शी, भाव-प्रवण तथा प्रेरक है। श्री गुलाबचंद कोटड़िया की कहानी बहुत ही अनूठी तथा नवयुग का नूतन संदेश देने वाली लगी। महिला सम्मेलन की राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. मंजु मेहरिया का दुर्घटना में पुत्र, पुत्रवधू और चालक सहित आकस्मिक देहावसान की खबर पढ़कर मर्मान्तक पीड़ा हुई। दिवंगत आत्माओं के प्रति अनुपूरित श्रद्धांजलि।

- श्री युगलकिशोर चौधरी
चनपटिया, बिहार

श्री नन्दकिशोर जालान के कुशल सम्पादन में समाज विकास के सभी अंक जैसे विशेषांक हो गये हैं। कुछ न कुछ विशेष हर अंक में रहता है जो विचारों में हलचल पैदा करता है। आपका सम्पादकीय कामाख्या यात्रा के अनुभव पुन: विशेष ही है। मैं आपसे सहमत हूं कि वर्तमान सनातन हिन्दू धर्म के स्वरूप में क्रांतिकारी परिवर्तन आवश्यक हो गये हैं पर आपलोग जाने किस अनजाने भयवश हिन्दू शब्द से बचना चाहते हों तो कैसे चलेगा। भारत देश की एकता का एकमात्र आधार यह सनातन हिन्दू धर्म है। मेरा विश्वास है कि भारत की सभी भाषाओं को देव नागरी लिपि में लिप्यन्तरित करके छापा जा सकता है। यह राष्ट्रीय एकता के लिए एक अनूठा कदम होगा। समाज विकास में मूल बांगला, मूल असमिया और मूल उड़िया की कविताएं उसी भाषा में देवनागरी लिपि में आसानी से छाप सकते हैं।

- श्री घनश्याम देवड़ा,
दिल्ली

आपलोग राजस्थानी भाषा न राजस्थान की सरकारी भाषा बनाने की चेष्टा करो। अब तो वसुंधरा राजे मुख्यमंत्री हैं, भैरोंसिंह शेखावत उपराष्ट्रपति पद पर आसीन हैं। सम्मेलन की तरफ से एक प्रतिनिधि मंडल दिल्ली और जयपुर जाकर सबसे मिल, चेष्टा करें तो काम सफल हो जावेगो। दिल्ली में राजस्थानी सांसदा सं मिलनो फिर उनाने साथ लेकर शेखावतजी से भेंट कर विचार-विमर्श करनो - उनकी राय लेकर मुख्यमंत्री से मिलणो पड़े कोई असंभव काम नहीं ह।

राजस्थानी भाषा राजस्थान राज्य की द्वितीय सरकारी भाषा बन सक ह। पहली सरकारी भाषा हिन्दी ही रहेगी, थोड़ो सो कागजां को खरचों सरकार को बढ़ जावेगो और कोई असुविधा नहीं ह। एक सुझाव प्रस्तुत ह। ''समाज-विकास'' पत्रिका में प्रयोग की तौर पर कम से कम चार पृष्ठ राजस्थानी भाषा का लेख, कविता और समाचार का आरक्षित कर सको। आपने सूचना छापनी पड़ेगी कि राजस्थानी भाषा में लेख, कविता और समाचार भेजने के लिए इस तरह धीरे-धीरे पृष्ठ संख्या बढ़ानी पड़ेगी यो बहुत जरूरी ह। राजस्थानी भाषा को प्रचार तो होवेगो ही साथ-साथ लोगों न एहसास होवगो कि आपनी भाषा को सम्मान बढ़ रह्यो ह। सम्मेलन समाचार भी राजस्थानी भाषा में छापन चाहिए। आपकी तरफ से वर्ष में एक बार दीपावली के अवसर पर राजस्थानी भाषा को एक विराट कवि सम्मेलन कलकत्ता म करनो चाहिए। इसमें राजस्थान, मध्य प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा का राजस्थानी भाषा का कवि, कवयित्रियां न आमंत्रित करनो चाहिए। इससे राजस्थानी भाषा को प्रचार के साथ-साथ लोगां म राजस्थानी भाषा का कवियां क प्रति सम्मान की भावना जाग्रत होवेगी।

- डॉ. श्यामसुन्दर भारती
निदेशक, भारतीय संस्कृति परिषद्
रानीगंज

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री तुलस्यानजी एवं महामंत्री श्री सुरेकाजी द्वारा मार्च २००४ के अंक में पूरे देश में बसे मारवाड़ी समाज को प्रवासी मारवाड़ी कहकर सम्बोधित किया गया है। यह कहां तक उचित है?

यह मेरी धृष्टता है, मैं क्षमा चाहते हुए लिखना चाहता हूं कि मारवाड़ी समाज को देश में रहते हुए प्रवासी शब्द से इंगित करना मुझे अनुचित भी लगा व एक-एक अलगाव की टीस सी हुई। भारतवर्ष के कुछ राज्यों में आज भी मारवाड़ी समाज को वक्र दृष्टि से देखा जाता है जिसका समाधान न तो स्थानीय स्तर पर और न ही राष्ट्रीय स्तर पर किया जा सका है और ऐसे में यदि अपने ही लोग प्रवासी शब्दों का इस्तेमाल करेंगे तो जो लोग हमें कूदृष्टि से देखते हैं वे और भी मुखर हो जाएंगे।

लोग तो बातों ही बातों में कह डालते हैं मारवाड़ी तो लोटा डोरी लेकर आया था आज नगर सेठ बन बैठा है। मैंने स्वयं अपने नगर में ऐसे शब्दों का सामना किया है और कड़े शब्दों में ऐसे लोगों का प्रतिकार यह कहकर किया है कि हम प्रवासी नहीं हैं, चूंकि भारतीय संविधान के अनुसार देश का कोई भी नागरिक कहीं भी (देश में) आ जा सकता है, व्यवसाय या नौकरीपेशा कर सकता है और यह कार्य सिर्फ हम नहीं बल्कि देश के हर जाति वर्ग के लोग कर सकते हैं। अत: उन्हें किसी की शान को ठेस पहुंचाने का कोई हक नहीं है। देश से बाहर रहने वाले नागरिक अवश्य प्रवासी भारतीय कहलाएंगे।

- भरत कुमार दहलान
कटिहार, बिहार

सम्पादकीय

बम्बई अधिवेशन २००४ में हुआ था, जिसके बाद देश की राजनीतिक परिस्थितियों में अद्‌भुत परिवर्तन हुआ है। जिस प्रकार की स्थितियों से राजनीतिक तत्व प्रभावित हुए हैं, उनकी कल्पना पहले कभी शायद ही की गई हो। जन चेतना से राजनीतिक क्षेत्र में यह आशा बंधी थी कि एकाधिकार, साम्प्रदायिक एवं मदांधता को इस देश की जनता कभी स्वीकार नहीं करेगी, लेकिन पिछले चार महीनों में ही सारी स्थिति ने ऐसा पलटा खाया है कि यह कहना असम्भव हो गया है कि कौन एकाधिकारवादी है, कौन साम्प्रदायिक-तुला से ही सब कुछ तौलना चाहता है और कौन पदलोलुपता के लिए सभी प्रकार की मान्यताओं का उल्लंघन करने को प्रस्तुत है। जहां कभी बात होती है और जिस किसी के मन को समझने बूझने का प्रयत्न किया जाता है, उससे ऐसी धारणा बनती है कि जनता में जो विश्वास अपने प्रतिनिधियों को सौंपा, उन्होंने उसे ताक पर रखने में कमी नहीं रखी। लोकतंत्र, समाजवाद और धर्म निरपेक्षता का दामन थम कर अधिनायकवाद को भरपूर गालियां देने वालों ने ही अपने स्वार्थ साधन के निमित्त अवसर और पर-अधिनायकवाद से संधि कर ली। जिस नई आर्थिक और न्यायिक व्यवस्था के प्रति सन् १९९९ में जनमानस आश्वस्त हुआ था, वह अब एक बहुत बड़े प्रश्नवाचक चिन्ह में बदल गया है। यह प्रश्नवाचक चिन्ह केवल देश के जनमानस के मन पर ही नहीं उभर कर आया है, बल्कि विदेशों में भी उनके अनुसार इस देश के प्रति दिलचस्पी रखने वाले विदेशियों के मानस पटल पर इन परिस्थितियों का दुष्प्रभाव कुछ न कुछ अवश्य दृष्टिगोचर हो रहा है।

इन सारी परिस्थितियों एवं स्थितियों से यद्यपि हमारे समाज का कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है, तथापि समाज का मानस इनसे सम्पूर्ण कट कर रहे या इनका कोई प्रभाव उस पर न पड़े, ऐसा सम्भव नहीं है। यह सब होते हुए सहज प्रश्न उठता है कि समाज को हर क्षेत्र में समुन्नत करने के लिए हमारे प्रयासों में क्या कुछ शिथिलता आनी चाहिए या आई है? आनी चाहिए या नहीं, उसका उत्तर कौन दे? लेकिन वास्तविकता यह है कि मानस के इस अन्तर्द्वन्द्वों और अन्य सब प्रभावों के बावजूद सम्मेलन का संगठन सक्रिय है। हमारी तो मान्यताएं हैं, उनके अनुसार सम्प्रदायवादिता एवं छोटी-छोटी जातिवादिता के फलस्वरूप उत्पन्न पृथकताओं और विषमताओं को मिटाने के लिए हम आज भी छोटी-छोटी जातिवादिता के फलस्वरूप उत्पन्न पृथकताओं और विषमताओं को मिटाने के लिए हम आज भी उतने ही सक्रिय और कृतसंकल्प हैं जितने पहले थे। इस बीच जितनी ओर जहां कहीं भी बैठकें एवं जनसभाएं हुईं उसमें अग्रवाल, माहेश्वरी, खण्डेलवाल, ओसवाल, ब्राह्मण, राजपूत एवं अन्य सभी छोटे-मोटे वर्गों को एक ही प्लेटफार्म पर लाकर उसके पारस्परिक भेदों को मिटाने, स्नेह बढ़ाकर एकता और उस एकता की शक्ति से परिचित कराने तथा जिनके पास जो कुछ है हर क्षेत्रों में जो समाज की प्रतिभाएं उभरी हैं, उनसे कदम और अधिक एकात्मकता की तरफ बढ़ा कर वे समाज की प्रतिमा के स्वरूप को और अधिक सुस्पष्ट एवं प्रभावशाली कर सकें और देश में समरसता और समीकरण के जीते-जागते उदाहरण हों, इसके लिए प्रयत्न जारी रहा है।

राजनैतिक उथल-पुथल जीवन के सामान्य प्रभाव को प्रभावित करती है और कभी-कभी उसका दूरगामी प्रभाव भी पड़ता है। किन्तु यह सही है राजनीति से अछूती सामाजिक जीवन प्रणाली की भी एक धारा है, जो हमारी संस्कृति और नैतिक मूल्यों से सम्बन्ध रखती है। इन मूल्यों का प्रतिफलन हमारे दैनिक जीवन के व्यवहार में प्रकट होता ही है, रस्म-रिवाजों, लोकाचारों, सामाजिक कृत्यों आदि में विशेष रूप से अभिव्यक्त होता है। सम्मेलन अपने आयोजनों द्वारा बराबर युग-बोध के अनुकूल प्रत्येक अवसर पर समुचित आचरण की शिक्षा देकर जन-मानस को तैयार करने में दत्तचित्त है। समाज की मशाल युवा-पीढ़ी के हाथ में रही है, युवा पीढ़ी पर ही भविष्य के सपनों को साकार करने का दायित्व है। वे सपने, वे आदर्श कैसे हों, यह उनकी शिक्षा एवं संस्कारों पर निर्भर करता है।

हमें यह नहीं भूलना है कि आज का युवक उपदेश पर विश्वास नहीं करता, वह कर्म पर ही विश्वास कर सकता है। यह मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि बच्चा, आप क्या कहते हैं उसका सहज अनुसरण नहीं करता, बल्कि आप क्या करते हैं इसका सहज अनुकरण कर लेता है। बहुधा तो वह सुनता ही नहीं, कान से सुन भले ही ले, पर समझने की चेष्टा नहीं करता। यह दायित्व समाज के प्रौढ़ व्यक्तियों का है कि वे अपने आचरण द्वारा उनके मन में उच्चादर्शों के प्रति श्रद्धा और आस्था विकसित करें और उनके निर्माण में सहायक हों। केन्द्रीय कार्यालय को अपना लक्ष्य सामने रखकर विभिन्न समस्याओं में प्रगति के लिए सूचिन्तन करना है। इसके लिए कुछ विशिष्ट समितियों के गठन की आवश्यकता पुनः उजागर हो रही है। कालांतर में समितियों की उपलब्धियां ही सम्मेलन और समाज की प्रगति का बैरोमीटर प्रमाणित होंगी। हमारी आशा है कि न केवल समितियों के कर्णधार बल्कि समाज के सभी सदस्य इनको सार्थक कर आज के युगानुकूल समाज को निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर करने में योगदान करेंगे।

काम होता नहीं

- आचार्य विष्णुकांत शास्त्री

काम होता नहीं किया जाता है
हृदय मिलता नहीं लिया जाता है।
किनारे बैठना तो सांस लेना है
बीच तरंगों के जिया जाता है।।
अखिल विश्व को जीत चुका जो
उसे हराती शंका मन की।
बन सकते हो राम स्वयं तुम
जीत सको यदि लंका मन की।।
कविता केवल कभी-कभी मुझसे हंसती है
प्राय: गुमसुम सी रहती, अवहेला करती।
पर चीर हृदय को आह निकलती है जब-जब
चुपचाप स्वयं आ मेरे दुख झेला करती।।
अंधकार की ओर नहीं तुम चलो ज्योति की ओर
रहे गूंजती यह पावन ध्वनि जड़ता को झकझोर।
सबसे घना अंधेरा जग में यदि अज्ञान अमा का
ज्ञान-सूर्य को लिये गर्भ में ग्रन्थालय है भोर।।
तुम विकास के पथ पर बढ़ते रहो निरंतर
तेजस्वी आनन हो श्रद्धा भीगा अंतर।
सपनों का संसार तुम्हारा सच बन जाये
नयी ज्योति ले चांद उतर आंगन में आये।।

होनहार

- जगदीश प्रसाद तुलस्यान
मुजफ्फरपुर (बिहार)

नवसृजन के कर्णधार तुम, आगे कदम बढ़ाओ
मंजिल तुमको मिल जाएगी, तनिक नहीं घबराओ।
आशाएं ही आशाएं हैं, तुमसे सारे जहां को
नए-नए अविष्कारों में, अपना जिगर लगाओ।।
जीवन पथ पर आगे बढ़ना, जग को कुछ कर के दिखलाना
स्वाभिमान है तेरे अन्दर, जीवन सफल बनाओ।
तुम आदर्श बनो इस जग के, होनहार कहलाओ
कृति की पूजा होती है, कुछ बनकर दिखलाओ।।
सत्य साधना की धरती पर, तुमने जन्म लिया है
जन जन में विश्वास जगाने, तुम ही आगे आओ।
स्वागत योग्य कदम है तेरा, सपना कोई सजाओ
साहस अपने मन में भरकर, खुद को सफल बनाओ।।
जीवन का उद्देश्य यही हो, कुछ बन के दिखलाना
सोहरत सारे जग में होगी, तुम विश्वास जगाओ।
'तुलस्यान' सब कुछ अपना है, ऐसे भाव बनाओ
जगमग-जगमग रहे सितारा, जग में नाम कमाओ।।

मालवीयजी का राज

एक बार कुछ अंग्रेज शिक्षाविद् बनारस आये। उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय देखने की इच्छा जाहिर की। मालवीयजी ने उन्हें विश्वविद्यालय की एक-एक इमारत बड़े मनोयोग से दिखाई और विस्तार से सबके बारे में बताते भी रहे।

सिर्फ एक इमारत बाकी रह गई थी, वह थी इंजीनियरिंग कॉलेज की इमारत। चूंकि मालवीयजी को किसी जरूरी बैठक में जाना था, अत: उन्होंने प्रो. टी. आर. शेषाद्रि से कहा कि आप इन महानुभावों को इंजीनियरिंग कॉलेज दिखा दें।

प्रो. शेषाद्रि बोले, ''अब तो शाम हो गयी है, शायद कॉलेज बंद भी हो चुका हो।'' फिर भी मालवीयजी ने कहा, ''कोई बात नहीं, वहा चपरासी तो होगा ही।''

शेषाद्रि जी ने शंका व्यक्त की, ''बहुत संभव है कि इस समय कोई चपरासी भी न हो।''

मालवीयजी ने उसी धैर्य से कहा, ''फिर भी ये लोग बंद दरवाजों में लगे कांचों से ही झांककर भीतर देख लेंगे। आप इन्हें ले जाइए।''

मालवीयजी और प्रो. शेषाद्रि की बातचीत सुन रहे अंग्रेजों में से एक ने कहा, ''अब मेरी समझ में आ गया कि किस प्रकार इतने बड़े विश्वविद्यालय का निर्माण हुआ होगा।''

यह वाक्य कहकर उन्होंने मालवीयजी के धीरज की प्रशंसा की थी।

हमारा समाज और हमारी सोच

✍ मोहन लाल तुलस्यान

हमारे समाज में शिक्षा, व्यापार एवं सम्पन्नता का काफी विस्तार हुआ है। लेकि इससे उल्टा, हमारा सुख का मानक, उसका ह्रास हुआ है। यह बहुत ही सोचनीय बात है! इसके कारण हमें खोजने होंगे और उन पर मनन करना होगा - क्योंकि किसी राष्ट्र या समाज का उत्थान उसके सुख के मानक के आधार पर अंकित होना चाहिए।

हमारे समाज में जहां बच्चों को जन्म के साथ ही यह शिक्षा दी जाती थी कि बुजुर्गों का सम्मान करना चाहिए, समाज की उन्नति ही प्रथम लक्ष्य होना चाहिए, संयुक्त परिवार की परंपरा कायम रखनी चाहिए- वह सब शिक्षा अब दकियानुसी कही जाने लगी है। बड़े से बड़े साधन सम्पन्न परिवार भी टूट रहे हैं। जब तलाक की बात कहीं दूर दराज के गांवों में चलती भी थी तो उसकी विषद निंदा एवं चर्चा होती थी- लोग इस बात को हजम नहीं कर पाते थे, लेकिन आज के शिक्षित दौर में यह आम बात हो गई है। यह पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव है या हमारी मानसिकता ही विकृत हो गई है - हम इससे ज्यादा परेशान नहीं होते - इसे समय का तकाजा मान लिया है, ऐसा क्यों?

क्योंकि मेरे ख्याल में हम ज्यादा स्वार्थ परत हो गए हैं। जहां पहले पूरा गांव ही अपना कुटुंब समझा जाता था, जब किसी गांव की लड़की का विवाह किसी दूसरे गांव के लड़के के साथ होता था तो लड़की वालों का पूरा गांव, लड़के के घर का पानी भी नहीं पीता था - कालांतर में हमारे दादाजी का परिवार ही हमारा कुटुंब रह गया - इसके बाद हमने अपने पिता के परिवार को ही अपना कुटुंब मानना शुरू कर दिया और फिर हम स्वयं के परिवार को ही कुटुंब मानने लगे। और इति श्री तो तब हुई जब हम स्वयं अपने को ही अपना कुटुंब मानने लगें - यानी के अपनी पत्नी एवं बच्चों को भी अपना कुटुंब मानना गवारा नहीं हुआ।

यह सब स्वार्थपरिता की चरमसीमा है। और यह सोच हमारी गलत शिक्षा पद्धति पर कुठाराघात है - आज आवश्यकता इस बात की है कि अगर समाज को बचाना है तो हमें अपने पुराने विचारों को अपनाना होगा जहां पहले पूरा गांव ही हमारा कुटुंब हुआ करता था - इससे समाज का भय भी रहता था, जिसके वजह से हम कभी भी गलत कदम नहीं उठा पाते थे - लेकिन आज तो हम कहते हैं कि हम स्वतंत्र हैं जिसका मतलब है कि हमें किसी से डरने की आवश्यकता नहीं है। हम स्वच्छंद रूप से जो चाहें वह कर सकते हैं।

इसी मानसिकता से भला समाज या परिवार का क्या भला हो सकता है? इसलिए शिक्षा के साथ हमें चरित्र निर्माण एवं विकास पर भी जोर देना होगा- हमें यह बात समझनी होगी कि सिर्फ पैसे के बल पर सुख नहीं खरीदा जा सकता - सुख तो अच्छी सोच, अच्छा वातावरण, अच्छे व्यवहार और अच्छी मानसिकता से ही संभव है।

इसलिए समय रहते अपने बच्चों के समुचित मानवोचित विकास पर ध्यान देना होगा ताकि हमारे समाज का विकास हो सके - हम सुखी जीवन जीकर ही परहित कर सकते हैं एवं समाज की स्थिति को सुधार सकते हैं।

घर-घर की कहानी

✍ भानीराम सुरेका, महामंत्री

समाज विकास के पिछले अंक में हमारे अध्यक्ष महोदय श्री मोहनलाल तुलस्यानजी ने अपनी कलम से सही लिखा था कि पहले जमाने में वृद्ध अनुभवी लोग सामाजिक पंच होते थे, बुजुर्गों की राय को मानना अनिवार्य होता था। राजनीति की गंदगी परिवार और समाज में घुस पैठ कर गई है, इसके कारण ही परिवार टूट रहे हैं, सुख-शांति मिट रही है आदि-आदि।

मैंने छोटे-बड़े घर-घर में बाप-बेटों को लड़ते-झगड़ते, मनमुटाव, एक-दूसरे का विरोध, एक-दूसरे की बातों को काटते हुए, दोनों को तीन और छः की तरह व्यवहार करते हुए देखा है। कारण है कि बाप-बेटे की सोच अलग है, व्यापार करने का तरीका अलग है, आधुनिकता व पुराने विचारों में टकराव है, यानि जेनरेशन का अन्तर है। बेटा शादी होने के बाद अपना परिवार अलग समझने लगता है, बीबी के साथ या अकेले भी देर रात से लौटना, देर से उठना, खानपान का फर्क आदि भी है। वे अपनी दुनिया अलग समझते हैं, अलग मस्ती में रहना चाहते हैं। बाप-बेटा एक दूसरे से मुंह बनाना, नफरत की नजर से देखने से वितृष्णा की भावना जन्म ले लेती है। बाप-बेटे में शीतयुद्ध देखा है।

बेटा बाप की बात का जवाब हां हूं में देता है, बात करने से बेटे को सरदर्द होने लगता है, वक्त नहीं है, वो नहीं चाहता कि मेरे को सलाह देवें।

वैसे कुछ बाप पैसे पैदा कर अहंकार के घमंड में बेटों को भी कुछ नहीं समझते। बाप सोचता है कि सब कुछ मेरा किया कराया है, व्यापार, घर में इज्जत, समाज में इज्जत, सम्बन्धियों में इज्जत मेरे कारण है। अब मेरे बूढ़े होने पर तजुर्बा न लेकर, बेटों ने पूरा अधिकार जमा रखा है। किन्तु जमाने के साथ चलना पड़ेगा, बच्चे भी प्यार के बोल सुनना चाहते हैं।

घर का कठोर अनुशासन नहीं चलेगा, बेटे को मित्र बनना पड़ेगा। मारवाड़ी में एक कहावत है "बाप की जूती जब बेटे के पैरों में आने लगे तो बेटे को दोस्त समझकर व्यवहार करना चाहिए।" अब रोब, हुक्म से चलाना बंद करना पड़ेगा। भय दिखाने से दूरी बढ़ेगी।

वृद्धावस्था में अपने परिवार के सदस्यों के साथ अगर हंसी खुशी से बिताना है तो

१. अपने पोते-पोतियों, बहुओं को प्यार के बोल देवें।

२. उनके पहराव व उनके कार्य में टोका टोकी न करें।

३. चाहे नुकसान होता हो, बिना मांगे सलाह न दो।

४. आंख-कान खुले रखो, बुरा होता हो तो मैत्रीपूर्ण सही सलाह देवें, सलाह मनवाने पर जोर न देवें, बच्चे सलाह माने या न माने उनकी इच्छा है।

५. जो प्यार से पहनने-खाने आदि मिल जावे उसी में संतुष्ट हो लें, कभी अपनी इच्छाओं को परिवार के सदस्यों पर नहीं थोपे।

६. बच्चों को अपनत्व-ममत्व देवें, उनके कार्य में सहयोग देने की चेष्टा करें।

७. दूसरों से बच्चों की शिकायत न करें, आपका कहना न माने तो।

बेटे की तरह ही बेटी है, किन्तु मां-बाप के बीच बेटी का टकराव होता नहीं है। अगर होगा भी तो थोड़ी देर के लिए फिर भी लड़की को एक बोझ मानते हैं। बेटी एक पुल का काम करती है, एक धागे का काम करती है। भाई-भाभी, मां-बाप, अपने बेटा-बेटी और ससुराल सबको मिलाने का काम करती है। आजकल लोग बोलते भी हैं कि लड़के से अच्छी लड़की होती है, मां-बाप के दुःख की बात लड़की ही ठीक से सुनती है। बेटी दोनों कुलों को गौरवान्वित करती है।

मां जितनी अपनी संतान को समझ सकती है उतना पिता नहीं, मां अपने पति को भी अच्छी तरह समझ चुकी होती है। मां अपने पति व बेटे की परेशानियों से दुःखी हो जाती है, उसकी मजबूरी होती है इधर पड़े तो कुंआ और उधर पड़े तो गड्ढा, दोनों को शांत कराने में प्रायः विफल हो जाती है, क्योंकि दोनों औरत की बात को वजन नहीं देते हैं। बीच-बचाव करके उनके रिश्तों को मीठा करने की चेष्टा करती है, दुःखी हो जाती है, खाना नहीं खाती और पति पर जोर चलाती है इसके कारण बेटे में और ताकत आ जाती है। एक समय बाप के नाक में धुआं निकलता था, यानि सब जगह जय-जय की, लड़के को पाला-पोषा, पढ़ाया, सुयोग्य बनाया और अच्छे घर से शादी बड़ी धूमधाम से की, अपने पास बैठाकर व्यापार में निपुण किया। उसके विवाह में भारत के कोने-कोने से लोग आये, किन्तु आज सबसे ज्यादा उसका लड़का दुश्मन हो बैठा है, घर से अलग होकर, अपना हिस्सा लेकर, वही व्यापार करता है और बाप के हर काम में अड़चन लगाते हुए बदनामी करता फिरता है। किस को क्या कहे, सब जगह यही घर-घर की कहानी हो गई है, पुराने लोग सहन नहीं कर पा रहे हैं।●

सम्मेलन इतिहास के पन्नों से

सामाजिक सुधारों सम्बन्धित सम्मेलन के आन्दोलन का एक दिन

✍ नंदकिशोर जालान

आलिंगन में कस लिया, कुछ पीस-सा डाला, बस चूमा नहीं- ''इस बार तो तुमलोगों के प्रदर्शन की आवाज ने अलीपुर और बालीगंज में भी तहलका मचा डाला। बड़ी चर्चा है, बड़ी प्रशंसा है। सफलता तुमलोगों को बरे। चलाये जाओ, चलाये जाओ।'' उन समवयस्य कोट्याधीश के स्नेहपाश के अलावा उनको आंखों और चेहरे पर झलकती खुशी सम्मेलन के आन्दोलन के प्रति सद्भावना ही नहीं, इस आन्दोलन के सामाजिक सफलता का खुला संकेत था। आपने देखा सम्मेलन के जुलूस को बड़ा बाजार में महात्मा गांधी रोड, कलाकार स्ट्रीट, सर हरिराम गोयनका स्ट्रीट, चित्तरंजन एवेन्यू के अलावा अलीपुर और बालीगंज में अलीपुर रोड, न्यू रोड, अलीपुर पार्क रोड, राजा संतोष रोड, ओल्ड बालीगंज रोड, गुरू सदय रोड, आइरनसाइड रोड, गरियाहाट रोड, मेन्डोविला गार्डेन आदि रास्तों पर से गुजरते हुए नारे लगाते हुए। हजारों व्यक्तियों ने देखा, समझा और खुलेआम दाद दी।

श्री रामकुमारजी बोले- ''आपका अन्दोलन सफल हो गया। इस बार अनेक विवाहों में आपके आन्दोलन का असर हुआ है। लोगों के विचार में परिवर्तन दिखाई देता है।''

इनके ये उत्साह ही हमारे बल को बढ़ाने के लिए और भविष्य में आंदोलन को तीव्रतर करने के लिए सहायक होंगे।

आपने देखा कि श्री कृष्णकुमारजी की पुत्री के विवाह में केवल पेय था, श्री श्यामलाल बाजोरिया के पुत्र के विवाह के स्वागत स्थल पर केवल एक शामियाना (पंडाल) तथा पेय था, श्री हरिप्रसाद कनोई की पुत्री के विवाह में पूरी सादगी थी, श्री भागीरथ जी कानोड़िया की पौत्री के विवाह में हांस चाब, मिलनी, सजनगोठ, पहरवानी आदि कितने ही नेग नहीं थे एवं श्री द्वारकाप्रसाद खेमका का ग्राण्ड होटल में प्रबन्ध सादगी व शिष्टतापूर्ण था। अनेकानेक विवाह आडम्बर शुन्य या अतिरेकों को बहुत कांट-छांट कर किये गये थे। ये सब अभिनन्दनीय आयोजन थे। जो व्यक्ति पैसे के विभेद की दीवार की दुहाई देकर अपनी कमजोरी छिपाते थे, संकोचते और सकुचाते थे तथा आडम्बर में औरों को मात करते थे, आज निराडम्बर पूर्ण विवाह आयोजन उनके लिए उनका रास्ता साफ और सपाट है। देखे कितने और कौन इस रास्ते पर दौड़ लगाते हैं।

श्री भगीरथजी ने बताया- ''भय तीन होते हैं जिनसे आदमी डरता है - राम का भय, समाज का भय और राज्य का भय। आज राम का भय तो कुछ है ही नहीं, समाज का भय भी चला जा रहा है, भय अब रहा तो सिर्फ राज्य का। विवाह समारोहों में आज निराडम्बर और सादगी का यदि कोई प्रयास दिखाई देता है तो सिर्फ राज्य के अर्थात् कानूनों के भय से।''

आपने ठीक ही कहा है कि जो समझाने बुझाने से सही मार्ग पर नहीं आते, उन्हें बंदिशे ही रास्ता दिखायेंगी। लेकिन समाज में पिछले पचास वर्षों का समाज सुधार आन्दोलन जिसके अग्रणी आप स्वयं रहे हैं, एक खुला अध्याय है कि केवल बंदिशों से नहीं बल्कि सामाजिक सुधारों के आन्दोलन से इस समाज ने जो अतुलनीय प्रगति की है, वह मार्ग आज भी अवरुद्ध नहीं हुआ है। सामाजिक बंदिशों को छिन्न-भिन्न करने वाले वे आन्दोलन एक चुनौती है कि आज की नई मदान्धता, नई बंदिशे जिससे समाज का एक बहुत बड़ा अंश पीस रहा है, नये आन्दोलन से क्यों न मिटा दिया जाए।

आपने देखा - श्री कृष्णचंदजी अग्रवाल के वर्णनासुर कुछ लोगों ने अपने सगे-सम्बन्धियों को एक स्थान पर न खिला-पिला सकने के कारण उनके भोज का प्रबन्ध अलग-अलग स्थानों में किया। क्या मजा मिला खाने वालों को, खिलाने वालों को, किसका मेलजोल बढ़ा, किसकी क्या शोभा हुई ? गनीमत है अभी इस अंचल में दिल्ली व मुम्बई की पुनरावृत्ति नहीं है, जहां खाने -खिलाने व बनाने वालों को सरकार ने एक साथ अपना ही मेहमान बना लिया। नहीं यह तरीका हमारा नहीं होना चाहिए।

''यदि वे ऐसा करते ही, तो शायद मैं स्वागत सत्कार में शामिल नहीं होता।'' इस पर जोर देते हुए श्री चिरंजीलाल जी ने कहा- मैं तो इस बात का कायल हूं कि समय के अनुसार ही सारे काम होने चाहिए। आज आडम्बर और दिखावे के लिए कोई स्थान नहीं है। आपलोगों ने जो कदम उठाया है वह निश्चय ही समाज के कल्याण के लिए है। हमारे यहां तो हमने इस विवाह में अधिक से अधिक सादगी रखने का प्रयत्न किया है। आप बड़ा पंडाल नहीं रखने की बात कहते हैं, परन्तु हमने तो कोई पंडाल बनाया ही नहीं, छोटा-सा सुन्दर शामियाना ही अच्छा है। स्वागत समारोह में चाय या काफी का प्याला और पान सुपारी ही काफी है।

हमारे सम्बन्धियों ने इस बात पर जोर दिया कि मेवा तो बरातियों के स्वागत के लिए रखा जाए और वे प्रेमपूर्वक इस बात को मान गये।''

हां, बदलते विचारों का प्रवाह उस ओर तेजी से बढ़ रहा है, जहां स्वागत समारोह में अतिरेक व आडम्बर का असल स्वागत उसका बहिष्कार करके होना है।

आपने देखा- गोलाघाट से आये श्री मोहनलालजी, तेजपुर के श्री बच्छराजजी एवं अन्य सज्जनवृन्द जुलूस देखते ही उसमें आ मिले और प्रदर्शनकारी बन गये। जून में जो संख्या साथियों की थी, कम से कम पंचगुनी इस बार थी और आगे तो कहीं और अधिक होगी ही। प्रदर्शनकारियों के हाथों से पट्ट स्वागत समारोह में शरीक व्यक्तियों ने बाहर आकर स्वयं ले लिये और उनके नाम तो गिने ही क्या, जो प्रदर्शन होता देख गाड़ियों में बैठे ही वापस चले गये।

गजल-२

- लक्ष्मण दास कवित्रा, मुण्डवा, नागौर

वादा करै निभावै कुण है।।
मतलब निकल्यां आवै कुण है''
पद कुरसी का लोग लालची।
सांधै भेद बतावै कुण है।।१।।
भंवरां ज्यू अै देय चकारा।
रस चूस्यां सुसतावै कुण है।।२।।
खुलै खाळ बिगड़ गौ खारवो।
सूंक लेम सरमावै कुण है।।३।।
हिक माटी रा सकल ढीकरा।
लेती बगत बजावै कुण है।।४।।
गंदी राजनीति की गलियां।
मिनख भलेरो जावै कुण है।।५।।
आं में बां में फरक कोयनी।
निब्लां कांम करा
वै कुण है।।६।।
मायड़ भाषा बोल वोट लै।
जीत्यां मांग उठावै कुण है।।७।।

पाठकों एवं लेखकों से निवेदन :

'समाज विकास' समाज की ज्वलन्त समस्याओं का एक विवेचक पत्र है।

लेखक-लेखिकाओं, कवि-कवयित्रियों आदि से निवेदन है कि वे अपने लेख, कहानियां, कविताएं, किस्से एवं सच्ची घटनाएं आदि हमें भेजें। देश और समाज की समस्याएं अधिकतर समानधर्मा होती हैं, तथापि उस परिप्रेक्ष्य में समाज का थोड़ा-सा विश्लेषण उचित होगा।

पत्र व्यवहार का पता :- सम्पादक, 'समाज विकास', १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७

''सुख-दुख की सौगात''

- नरेन्द्र कुमार बगड़िया, कोलकाता

खाई है ठोकरें बहुत जिन्दगी में
अब निर्माण की नाते करें
लिया जिन्दगी में काफी
अब देने सौगात की बातें करें
पाने में तो सुख है पर-
देने में है ज्यादा सुख
सुख के सपनों में सभी डोलते
अब दुख के स्वाद-चुभन की बातें करें
मानवता का झूला पड़ा सामने
इसे कभी बिसराये ना
निशदिन के दुख सुख के क्षणों में
आपस की प्रीत मिटाये ना ?
सरिता बढ़ती पर्वत से निकलकर
नाना राहों को पार करे
पर, पाने को अपनी सुमंजिल
मन में ना कभी-कोई अविश्वास धरे
आखिर में नदी सलोनी वह
सागर में जाकर मिल जाती है
होते सार्थक संकल्प जीवन के उसके
जब मानविकता खातिर
निर्मल, शीतलता भरा जीवन
सबको वह दे जाती है।

मातृभूमि के अनन्य सपूत महाराणा प्रताप व भामा शाह

✍ जुगल किशोर जैथलिया, कलकत्ता

भामाशाह का नाम मातृभूमि के उन गिने चुने रत्नों में से है, जिन्होंने आजीवन अपनी मातृभूमि की स्वाधीनता की रक्षा के लिए सतत् संघर्ष किया एवं अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। देश के लिए अपनी सम्पदा की आहुति देने का प्रसंग जहां भी आयेगा, भामाशाह का नाम स्वाभाविक रूप से ही सर्वप्रथम स्मरण आयेगा। मेवाड़ एवं महाराणा प्रताप की कीर्तिपताका का सुदृढ़ दण्ड भामाशाह ही थे। वे केवल दानवीर ही नहीं थे, एक योग्य सेनापति एवं कुशल प्रशासक भी थे। इसी कारण इतिहास में वे 'मेवाड़ के उद्धारक' के नाम से भी विख्यात हैं। भारत सरकार ने कुछ वर्ष पहले उनकी ४००वीं पुण्यतिथि पर विशेष डाक टिकट भी जारी किया था, जिसमें उन्हें 'राजा भामाशाह' का संबोधन देकर राष्ट्र की श्रद्धा व्यक्त की गई थी। भामाशाह के पिता भारमल्ल एवं उनके बाद के वंशजों का भी मेवाड़ के इतिहास में स्मरणीय योगदान रहा है। भामाशाह के बाद उनका पुत्र जीवाशाह एवं पौत्र अक्षयराज भी उन्हीं की भांति मेवाड़ के प्रधान बने एवं अपनी सेवाएं अर्पित कीं।

भामाशाह का जन्म २८ जून १५४७ (आसाढ़ शुक्ल १०, १६०४) को हुआ। इनके पिता भारमल्ल को १५२३ में प्रशासनिक एवं सैनिक योग्यता देखकर महाराणा सांगा ने प्रसिद्ध रणथम्भौर किले की किलेदारी सौंपी थी किन्तु इस किले पर १५४२ में शेरशाह सूरी का आक्रमण एवं अधिकार हो जाने पर ये महाराणा उदय सिंह के पास चित्तौड़ में ही आ गए। महाराणा उदय सिंह का बाल्यकाल रणथम्भौर में भारमल्ल की देख-रेख में ही बीता था अत: वे भारमल्ल की कर्तव्यनिष्ठा, कूटनीतिज्ञता, प्रशासनिक कुशलता आदि गुणों से परिचित थे। इस कारण चित्तौड़ आने पर भारमल्ल को एक लाख का पट्टा देकर सामन्त बना कर सम्मानित किया। मेवाड़ के सामन्तों में यह बहुत बड़ी जागीरी थी। पिता की मृत्यु के उपरान्त वह जागीरी भामाशाह को मिली। भारमल्ल के दो पुत्र हुए भामाशाह और ताराचन्द। ये दोनों भाई राम लक्ष्मण की जोड़ी की तरह थे एवं दोनों ही शूरवीर तथा कुशल प्रशासक सिद्ध हुए। भामाशाह का बचपन चित्तौड़गढ़ में ही बीता एवं अस्त्र-शस्त्र एवं घुड़सवारी की शिक्षा-दीक्षा भी यहीं हुई। प्रशासनिक कुशलता, सैनिक योग्यता एवं दानशीलता के गुण इन्हें अपने पिता से विरासत में मिले। महाराणा उदयसिंह के ज्येष्ठपुत्र प्रताप से भी भामाशाह की मित्रता चित्तौड़ में ही हुई। प्रताप भामाशाह से ७ वर्ष बड़े थे। महाराणा उदय सिंह का अपनी छोटी रानी भटियानी पर अधिक प्रेम था। छोटा होने पर भी इस रानी के पुत्र जगमाल को युवराज घोषित किया गया। १५७२ में महराणा उदयसिंह की मृत्यु के बाद उनकी इच्छानुसार जगमाल मेवाड़ की गद्दी पर बैठा। पर मेवाड़ में जैसी संघर्षपूर्ण परिस्थितियां थीं, उसमें सभी सरदारों की आशायें वीरता की प्रतिमूर्ति प्रताप पर केन्द्रित थीं। वे बड़े भी थे। राज्य के वास्तविक हकदार भी थे। इस स्थिति में सभी प्रमुख सामन्तों सरदारों ने श्मशान भूमि पर ही प्रताप को राजगद्दी पर बैठाने का निश्चय कर, जगमाल को बलपूर्वक राजगद्दी से उतारकर प्रताप का राजतिलक कर दिया। इसमें भामाशाह का प्रमुख योगदान था। प्रताप के राजतिलक के समय मेवाड़ को छोड़कर भारत के अधिकांश भाग पर विदेशी आक्रांता मुगल बादशाह अकबर का अधिकार हो चला था। उसके भारत का एकछत्र सम्राट होने में केवल मेवाड़ ही बड़ी बाधा बना हुआ था, जिस पर वह पहले भी क्रूरतम आक्रमण कर चुका था पर सफलता नहीं मिली थी। अत: प्रताप के राजगद्दी पर बैठते ही उसने दबाव बनाना प्रारंभ किया एवं वर्षों तक लगातार अपने प्रमुख सामन्तों और मंत्रियों को प्रताप को समझाने-बुझाने भेजा कि वह भी अन्य राजपूत सरदारों की तरह अधीनता स्वीकार कर चैन से जिये। इस क्रम में जलाल खां कोरची, कुंवर मानसिंह, राजा भगवन्तदास एवं राजा टोडरमल जैसे महत्वपूर्ण व्यक्ति थे परन्तु प्रताप को वे समझा नहीं पाये। इधर अकबर बेताब हो रहा था। अत: युद्ध अनिवार्य हो गया जो इतिहास में हल्दीघाटी के युद्ध के नाम से विख्यात है। यह युद्ध १८ जून १५७६ को खमनोर गांव के समीप के मैदान में हुआ। इसे अब 'रक्तलाल' कहते हैं। यह छोटा सा भयंकर युद्ध जिसमें दोनों पक्षों ने जान सस्ती और इज्जत महंगी कर दी थी, प्रात:काल आरंभ होकर दोपहर तक चला। राणा प्रताप द्वारा दी गई ब्यूह रचना में राजा रामसिंह तंवर तथा भामाशाह एवं उनका भाई ताराचंद अपनी सैनिक टुकड़ियों सहित दाहिनी तरफ का मोर्चा सम्हाले हुए थे। इन लोगों ने राजा मानसिंह के नेतृत्व में युद्ध कर रही मुगल सेना के बाएं पक्ष पर इतना तेज हमला किया कि बाईं तरफ की मुगल सेना भेड़ों के झुण्ड की तरह भाग खड़ी हुई। भामाशाह एवं ताराचन्द दोनों ही भाइयों का शौर्य देखने लायक था। इसके बाद ये दोनों ही राणा प्रताप के इर्द-गिर्द केन्द्र में आ गये एवं अन्त तक वहीं रहे। प्रताप को युद्ध क्षेत्र से सकुशल निकालने एवं सुरक्षित स्थान पहुंचाने में इन दोनों की बड़ी भूमिका रही। तंवर रामसिंह एवं उसके तीनों पुत्र तथा झाला मान्ना, झाला बीदा आदि

कलकत्ता के मेकफर्सन पार्क में महाराणा प्रताप की आवक्ष प्रतिमा स्थापित एवं पार्क का नामकरण महाराणा प्रताप पार्क- राजस्थान परिषद की अस्मरणीय उपलब्धि

राजस्थान परिषद द्वारा मेक्फर्सन पार्क, कोलकाता में स्थापित महाराणा प्रताप की मूर्ति का ३० मई २००४ ईस्वी को उद्घाटन करते हुए आचार्य विष्णुकांत शास्त्री, महामहिम राज्यपाल उत्तर प्रदेश। साथ में परिलक्षित हैं (बाएं से) श्री जुगलकिशोर जैथलिया, विधायक श्री सत्यनारायण बजाज, सांसद सुश्री ममता बनर्जी, मेयर श्री सुव्रत मुखर्जी, उपमहापौर श्रीमती मीना देवी पुरोहित एवं सर्वश्री अरुण प्रकाश मल्लावत, शार्दूल सिंह जैन, रुगलाल सुराणा (जैन), राजाराम बिहानी एवं महावीर बजाज प्रभृति।

कलकत्ता की सबसे प्रमुखतम व उद्योगपतियों की कर्मस्थली 'इंडिया एक्सचेंज प्लेस' का नाम बदलकर 'राणाप्रताप प्लेस' करने की घोषणा

KOLKATA MUNICIPAL CORPORATION - NOTICE

Following proposals for renaming of roads/lane/squares etc. have been accepted in the meeting of the Road Naming Advisory Committee.

Serial No.	Present Name	Proposed Name
1.	India Exchange Place	Rana Pratap Place
2.	Sukeas Lane	Phusraj Bachhawat Path
3.	Brahmo Samaj Road	Gurudev Rabindranath Sarani
4.	Ripon Square	Mirca Eliade Square
5.	The portion from the Crossing of A.P.C. Road to J. L. Nehru Road (Calcutta Club) to Khidderpore Crossing	Ballavbhai Patel Sarani
6.	May Fair Road	Bhagat Singh Sarani

If anybody has any objection to the above noted proposed names shall send their objection to the Municipal Secretary within a month from the date of the publication of the notice.

As approved by Kolkata Municipal Corporation's meeting dated 10.09..2003 Middleton Street has been renamed as **"Prafulla Chandra Sen Sarani"**. Hereafter the new name **"Prafulla Chandra Sen Sarani"** will be used everywhere replacing Middleton street.

32/2004-05

अनेक प्रमुख सरदार इसमें वीरगति को प्राप्त हुए।

हल्दीघाटी के युद्ध को मुगल पक्ष ने अपनी विजय बनाकर प्रचारित किया परन्तु युद्ध के दूरगामी प्रभाव याने लक्ष्यप्राप्ति एवं ख्याति को देखते हुए वास्तविक विजय प्रताप की ही मानी जानी चाहिए। गुरिल्ला युद्ध में न तो युद्ध से हट जाने का कोई महत्व है, न उस स्थान पर हुई हार जीत का। महत्व तो अंतिम मोर्चे पर विजय का है। मुगल सेना जिस काम के लिए आई थी वह कुछ भी पूरा नहीं कर पाई। न तो प्रताप को पकड़ पाई, न वहां स्थाई आधिपत्य ही जमा पाई। वह दहशत में रही कि न जाने प्रताप और उसके सैनिक कब पहाड़ियों से उन पर टूट पड़े। मानसिंह को भी अकबर के पास जाकर युद्ध के बाद अपमानित ही होना पड़ा। हल्दीघाटी युद्ध के बाद प्रताप की कीर्ति पताका चारों ओर फहराने लगी। यह तो सचमुच जनयुद्ध बन गया था, जिसमें राजपूतों के सभी वर्ग, कायस्थ, ब्राह्मण, भील, चारण तो शामिल थे ही, अफगानी पठान भी शामिल थे जो हकीम खां के नेतृत्व में प्रताप की ओर से लड़े थे। इस युद्ध के बाद प्रताप समूचे राष्ट्र की स्वाधीनता की लड़ाई के प्रतीक बनकर उभरे थे। हल्दीघाटी के युद्ध में दिखाई गई सैनिक कुशलता से प्रभावित होकर महाराणा प्रताप ने भामाशाह को 'प्रधान' या प्रधानमंत्री के पद पर नियुक्त कर दिया। भामाशाह प्रताप के राज्यारोहण के काल से ही उनका पूरा आर्थिक प्रबंध सम्भालते थे। इस युद्ध के बाद बहुत से प्रमुख सरदारों के मारे जाने से मेवाड़ की अस्थिर होती प्रशासनिक व्यवस्था को दूरस्त करने हेतु भामाशाह को जो नया उत्तरदायित्व मिला उसे उन्होंने पूरी कुशलता से निर्वाह किया। अकबर ने हल्दीघाटी युद्ध के उपरान्त भी मेवाड़ विजय यानि प्रताप को पराजय के स्वप्न को पूरा करने हेतु सैनिक अभियान जारी रखे। इस समय कुंभलगढ़ की नाकेबन्दी कर इस पर अधिकार कर लिया पर प्रताप, भामाशाह, सभी सरदार एवं प्रजा जन वहां से पहले ही अन्यत्र प्रस्थान कर चुके थे। यह भामाशाह की चतुराई थी। मेवाड़ पर इस समय आर्थिक संकट गहराया हुआ था। भामाशाह एवं उनके भाई ताराचंद ने १५७८ में अकबर के अधीनस्थ मालवा के क्षेत्र पर आक्रमण कर वहां से दण्ड स्वरूप २५ लाख रुपये एवं बीस हजार अशर्फियां प्राप्त की एवं ईडर में निवास कर रहे महाराणा प्रताप को भेंट की। इस धन से प्रताप ने सेना संगठित की और मेवाड़ से मुगलों को खदेड़ने का अभियान किया। सर्वप्रथम दिवेर के शाही थाने पर (कुंभलगढ़ से ४० मील दूर) आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया, जिसका सामरिक दृष्टि से बड़ा महत्व था। इस अभियान में भामाशाह के साथ कुंवर अमरसिंह एवं ताराचंद भी थे। दिवेर की लड़ाई की तुलना कर्नल टॉड ने 'मेराथान' के युद्ध से की है, जिसका यूरोप के इतिहास में अत्यन्त महत्व है। इसके उपरान्त प्रताप का और भी अनेक जगह पुनः अधिकार हो गया- कुंभलगढ़ भी अधिकार में आ गया पर सुरक्षा की दृष्टि से प्रताप ने चावंड को अपनी राजधानी बनाया।

इस सफलता से क्रुद्ध होकर अकबर ने शाहबाज खां को दिसम्बर १५७८ को दूसरी बार मेवाड़ पर आक्रमण करने हेतु भेजा। प्रताप को फिर पीछे हटना पड़ा। एक वर्ष बाद शाहबाज खां बड़ी तैयारी से आया। बार-बार के युद्धे से मेवाड़ जर्जरित हो चुका था और आर्थिक संकट भी गहरा गया था। इससे प्रताप के मन में भी हताशा आ गई। ऐसे समय भामाशाह ने बहुत बड़ी धनराशि प्रताप के चरणों में भेंट की। इससे २५ हजार सैनिकों का १२ वर्षों तक का खर्चा चलाया जा सकता था। भामाशाह की व्यक्तिगत सम्पत्ति का यह समर्पण इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। इस धन से महाराणा प्रताप ने सैन्य एकत्र की एवं मुगल विरोधी अभियान को पूरे वेग से चलाया। यह घटना १५८० के लगभग की है। इस घटना के कारण भामाशाह को इतिहास में 'मेवाड़ के उद्धारक' के रूप में स्मरण किया जाता है।

इतिहासकारों का कथन है कि भामाशाह ने राजकोष को अन्यत्र सुरक्षित छिपाकर रखी राशि ही जरूरत के समय प्रताप को समर्पित की थी। प्रताप के त्याग, बलिदान एवं संघर्ष से सारा देश अनुप्राणित था। प्रताप मेवाड़ में ही नहीं, पूरे भारत के स्वातंत्र्य संघर्ष का प्रतीक बना हुआ था। भामाशाह द्वारा निजी सम्पत्ति का दान किया जाना भामाशाह के लिए भी आत्मगौरव की बात थी। ऐसे देशभक्त एवं स्वामिभक्त के बल पर ही प्रताप ने १५८६ तक मांडलगढ़ और चित्तौड़गढ़ को छोड़कर सम्पूर्ण मेवाड़ पर पुनर्विजय प्राप्त की। अकबर भी उस समय उत्तरी पश्चिमी सीमांतों पर अफगानों से उलझ गया। मेवाड़ की ओर दृष्टि नहीं कर पाया। १५९७ में चावंड में प्रताप के स्वर्गारोहण तक एवं बाद में अमरसिंह के राजतिलक के आरंभ के २-३ वर्ष तक मृत्यु पर्यन्त भामाशाह मेवाड़ के प्रधानमंत्री के रूप में सेवा करते रहे। वे आर्थिक दृष्टि से भी उदार थे। मुक्त हस्त से चारणों, कवियों एवं प्रजा के जरूरतमंदों की सहायता करते रहते थे। धार्मिक दृष्टि से भी उदार थे। सभी सम्प्रदायों के मंदिरों का उन्होंने जीर्णोद्धार कराया। ये मंदिर मुगल आक्रमण के कारण ध्वंस हो गये।

श्री अरविन्द

"इस समूचे बीहड़ के बीच विश्वास की आंखें देख पा रही है कि एक अनगढ़ लेकिन विपुलाकार परिवर्तन का श्री गणेश हो गया है। मनीषा और ज्ञान-अभी न सही सौंदर्य- की वाणी अब सुनी जाने लगी है और तेजी के साथ किसी विस्तृत, धुंधली लेकिन अन्त में कार्यकारी संकल्प शक्ति को अपने उद्देश्य साधन के लिए उत्पन्न करने में समर्थ होने लगी है।"

"अगर उपनिषदों या बुद्ध के जमाने का या बाद के संस्कृति युग का कोई पुराना हिन्दुस्तानी आज के हिन्दुस्तान में ला बिठाया जाए, तो वह देखेगा कि उसकी जाति पुराने वक्त के बाहरी रूपों, छिलकों और चिंथड़ों से चिपटी हुई है, और उसके ऊंचे मतलब के दस हिस्सों में से नौ को खो बैठी है। उसे अचरज होगा कि यहां इतना दिमानी लचरपन, इतनी जड़ता है, बातों को दोहराते रहना है, जो हमें आगे नहीं बढ़रता। विज्ञान का खात्मा हो गया है, कला बहुत दिनों से बांझ हो गई है और रचनात्मक बुद्धि में शैथिल्य आ गया है।"

हिम्मते मर्दा, मददे खुदा की एक अद्‌भुत एवं अस्मरणीय यात्रा

''तृष्णा'' की विश्व परिक्रमा

✍ डॉ. तारादत्त 'निर्विरोध', जयपुर

मेजर एस.एन. माथुर पाल नौका के राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी रहे हैं। भारतीय थल सेना के इंजीनियर रहते हुए उन्होंने अनेक संकल्पनाओं को मूर्त रूप प्रदान किया और हवा से चलने वाली पाल नौका द्वारा विश्व की परिक्रमा की। तब उनके साथ नौ आर्मी इंजीनियर थे और यह परिक्रमा २८ सितम्बर, १९८५ के दिन से प्रारम्भ होकर १० जनवरी १९८७ को पूर्ण हुई। अर्थात् ४७० दिनों की इस यात्रा में सात समंदरों के आर-पार दस्तक देते हुए वे सभी देशों तक पहुंचे और सब कहीं सेनाध्यक्ष या राष्ट्रपति द्वारा उनका भव्य स्वागत किया गया। इस यात्रा की पाल नौका को ''तृष्णा'' नाम दिया गया था और तृष्णा का यह अभियान भारत का पहला विश्व व्यापी अभियान था। जैसा मेजर एस.एन. माथुर ने बताया, इस जल यात्रा पर अभिनेत्री लीला नायडू के पति डॉम मोरेस ने इंग्लिश में एक वृहद ग्रंथ की रचना की जिन्हें 'भारत का शेक्सपीयर' कहा गया है। इस सचित्र ग्रंथ का नाम भी ''तृष्णा'' ही रखा गया।

पाल नौका पर विश्व भ्रमण की इस रोमांचक यात्रा के वर्णन को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में प्रकाशित किया गया था और अनेक पत्र-पत्रिकाओं के मुख पृष्ठ इस तृष्णा पाल नौका से ही तैयार किए गए थे। हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में चर्चित 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' के २७ सितम्बर, १९८६ के अंक के मुख पृष्ठ पर तृष्णा का चित्र प्रकाशित देखकर पाठक विश्व यात्रा के बारे में जानने के उत्सुक थे और पाल नौका तृष्णा की उन दिनों ज्यादा ही चर्चा थी।

मेजर माथुर ने जानकारी दी कि १० जनवरी, १९८७ को तृष्णा संबंधी डाक टिकट भी थल सेनाध्यक्ष सुन्दरजी द्वारा जारी किया गया था जिसे प्रतीक रूप से ग्रहण किया गया। तब शायद ही देश-विदेश की कोई पत्र-पत्रिका रही हो जिसमें तृष्णा की विश्व व्यापी परिक्रमा की जानकारी न प्रकाशित हुई हो।

हुआ यह कि मेजर माथुर उन दिनों पाल नौका प्रतियोगिताओं में भाग लिया करते थे और विजयी होते तब नई परिकल्पनाओं में खो जाते। वे सोचा करते 'पंख होते तो उड़ जाती...' की तरह हवा से उड़ते हुए कहां तक पहुंचा जा सकता है और मन की उड़ान से कहां तक? मन हुआ और साथियों ने साथ दिया तो निकल पड़े मन की उड़ानों के लिए विश्व के देहरी-द्वार। घर वालों के विरोध के बावजूद उन्होंने यह यात्रा तय की। जब लौटे तो लोग आश्चर्यचकित से देख रहे थे- यह सब कैसे हुआ? मेजर माथुर का कहना था कि यह संकल्प और विचार की बात है। यदि आप चाहें तो विश्व क्या, सूर्य, मंगल और चन्द्रलोक के पार तक पहुंच सकते हैं अन्यथा लोग तो धूप, हवा और ओलों के भय से घर से बाहर नहीं निकल पाते।

यह पूछने पर कि यात्रा के विपरीत परिणाम भी तो निकल सकते थे, मेजर माथुर ने बताया, ''संसार का हर बड़ा काम किसी जोखिम के साथ पूरा हुआ है और यदि जोखिम नहीं उठाए जाते तो हम विकास यात्रा पूरी कैसे कर सकते थे? साहस तो करना ही पड़ेगा अन्यथा मन का डर तो हमें कुछ नहीं करने देगा, न संघर्ष, न संकल्प और न ही निश्चय। ''तृष्णा'' पाल नौका के नामकरण के पीछे कोई उद्देश्य था या नाम यों ही रख लिया गया, मेजर कहने लगे, ''तृष्णा अधरों से ढरकती प्यास ही तो है, कुछ जानने और देखने की एक निरंतर प्रयास। बस यही सब था उस सोच में और हम दस इंजीनियर निकल गए इस परिक्रमा के लिए।

मेजर माथुर पाल नौका और घुड़सवारी-पोलो के राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी के साथ नौकायान के बीच वर्षों तक अन्तर्राष्ट्रीय एम्पायर भी रहे। अपनी अभिरूचियों की चर्चा करते हुए बताने लगे- ''मैं सदैव से अपनी रौ में चलने का आदि रहा हूं और कितना ही विरोध हो, अपने लक्ष्य के लिए संघर्ष करना पड़े, मैं अपने रास्ते नहीं बदलता। यदि रास्ते बदलता तो नौकायान में इंग्लैण्ड का सर्वोच्च पुरस्कार ''सर्टिफिकेट ऑफ मेरिट'' कैसे प्राप्त कर पाता? यों तो मुझे राष्ट्रपति द्वारा 'सेना मंडल' भी मिला है, खेल परिषद का ''महाराणा प्रताप पुरस्कार'', मेवाड़ फाउंडेशन का पुरस्कार और ''राजस्थान शिरोमणि' भी। दूसरे अन्य अनेक पुरस्कार भी मिले हैं, लेकिन ''सर्टिफिकट ऑफ मेरिट'' पाकर लगा था तृष्णा का अभियान सफल रहा।''

रिश्ते

- शम्भु चौधरी

किताबों व पन्नों में, धागे व बन्धन में,
सहारा सिर्फ इतना है,
भावना व विचारों का,
खून के रिश्ते न टूटते हैं, न तोड़े जाते हैं,
टूटता है, दिल अपना।
एक टूटता है, तो दूसरा तोड़
दिया जाता है,
मैं तो दोषी हूं सिर्फ इतना,
शब्दों को तोड़ता नहीं जोड़ता हूं।

म्है म्हारो सुहाग मिटावण न चाहूं

✍ मीठालाल खत्री, जालोर (राजस्थान)

म्हारै नणद बाई, डाबै हाथ कानी जिको कमरो है, उण में जावण वास्तै म्हनै कैवे है। उणा रो कैवणो वाजिब ई है। क्यूं कै इण घर री भींता तकात सूं म्हैं अणजाण हूं। इण घर रा नैम कायदां म्हैं कोनीं जाणूं । नणद बाई बतायो उण कमरा मांय म्हैं जावण लागू।

नेनो सोक कमरो है। कमरा में बड़ता ई म्हैं एक पलंग बिछयोड़ो देखूं हूं। म्हैं जाणूं के ओ पलंग दोय जणां रै मनां नै एक करैला... सुख-दुख अबै उण मिनख सूं जुड़ ग्यो है, जिण सूं कीं ई वास्तौ पैला कोनीं हो.... नीं जाण ही अर नीं ई पिछाण.... पण नवदी रा सात फैरां खायां पछै, जिण सूं हथलेवो जोड़यो, उण सूं हेत करणो पड़े है। सोचती थकी म्हैं पलंग रै डाबी कानी नीचै आंगणा माथै बैठ जावूं हूं।

पाखती दूजा कमरा मांय सगळां सोवण री त्यारियां में लाग गया हैं... आंखां में ब्याव रो रातीजगो जिको है! ....ठीक है, अे तो सगळां अबार सो जावैला... पण म्हैं अेकली कित्ती जेज तांई बैठी रैवूंला... घणी रात गी परी है, अबै तो उणां नै आ जावणो इज चाइजै। म्हारो काळजो धक-धक कर रह्यो है। म्है किण तरिया उणां रै सामी बात करूंला... एक अजब घड़ी री कल्पना सूं म्हारै मन में खळबळी होवण लागी है। अेकाअेक 'वे' कमरा मांय आवै है। उणां रै कपड़ा सूं इत्तर री खबसू सारै कमरा मांय फैल जावै है। मन हुवै कै उणां सूं म्हैं पूछूं कै इत्ती देर तांई कठै बैठा हा। पण पैली रात रो संको इतरो कै जुबान खुली नीं... म्हैं घूंघटों काढ्या आंगणै बैठी ई री। 'वे' सीधा पलंग माथै हवळै सूं बिराज जावै है। मुंडै में पान है। मोजड़ियां पैहर्योड़ी है। अेकाअेक 'वे' की सोचण लागै है। पछै म्हनै बुलावै है, 'अठे आ।''

पण म्हैं कीकर जावूं उणा रै कनै-म्हनै सरम आवै है... म्हैं नीचे बैठी ई री... कोनी उठी।

'कांई सुण्यो कोनी।' अबकी वे कोट उतारता थकां हवळे सूं कैवे है।

म्हैं सोच्यो, म्हनै उणां रै कनै जावणौ चाइजै। म्हैं उठने उणा रै सामी ऊभी व्है गी। बै कैवण लागै है, 'कोट नै खूंटी पर टांग दे।'

म्हैं उणां रै हाथ सूं कोट लेय'र खूंटी में टांग दिया। म्हैं खूंटी कनै ई ऊभी-ऊभी नख कुचरण लागू हूं।... नख कुचरती-कुचरती म्हैं सोचूं हूं कै उणां र कनै जावूं के पाछी नीचै आंगण माथै बैठ जावूं! ... म्हैं ओ सोच ई री हूं कै कैवै, 'खुंटी कनै ऊभी रेवैला कै म्हारै कनै आव'नै सुख री कीं बातां करैला।'

म्हैं हवळै-हवळै पग सरकावती थकी उणां रै कनै जाय'नै ऊभी व्है जावूं हूं... वै पोता री आंगळी मांय सू सोना री वींटी निकाळ रह्या है... सायत म्हनै देवैला... म्हैं आ बात सोच ई री हूं कै वै हाथ पकड़ नै म्हनै पलंग माथै बिठाय दी... म्हारी आंगळी उणां रै हाथ में है। अेकाअेक उणां रै मुंडा सूं म्हनै दारू री भभक आवण लागै है... दारू री गंध सूं म्हैं म्हारी आंगळी उणां रै हाथ सूं छटकाय देवूं अर ऊभी व्हैनै सोचण लागू हूं... दारू! गजब व्है ग्यो... जिण दारू म्हारै बापा री जिनगी सूं खिलवाड़ करी, बो ई दारू आज पाछो म्हारै सामी ऊभो है।... म्हनै याद है कै जिण रात बापा दारू पी'नै घरै आवतां तो बाई रै साथै मारकूट करता ई... अर पछै गाळियां बकता थकां भूखा ई सो जावता हा। दारू री आदत इतरी खराब ही कै डागदर साब साफ कह दियो हो कै कारी नीं लागैला, क्यूं कै फैफड़ा सड़ग्या है। पण एक लुगाई रो जीव धणी रै खातर निकळ जावणो चावै है... बाई दवा दारू मांय घणा ई पइसां घाल्या... पण एक दिन बाई रो सुहाग हमेसा रै वास्तै उडग्यो।

म्हारा बाप! दारू का पीवाळ!! म्हारा हथ ई पीळा नीं करा सक्या। सेवट बाई गिनायतां सूं भाई-बापो कर'नै म्हारो सगपण करायो... अर हिम्मत कर'नै हाथ पीळा करा दिया... पण अठै!.... पाछो दारू सूं पाळौ पड्यो।

'ऊभी क्यूं व्है गी... कांई बात व्है गी!' वै म्हनै पूछण लागै है।

म्हैं हालताई बोली नीं हूं, पण अबै बोलणो पड़ैला... उणां नै दारू सूं भान कोनी... सो म्हैं हवळै सूं बोलीं, 'म्हनै बींटी कोनी चाइजै... म्हनै चाइजै है... अमर सुहाग... म्हारी मांग हमेसा रै सारू भर्योड़ी रैवै।'

'पण ओ तो एक दस्तुर है।' वै म्हनै समझावता थकां कैवै ह।

'आखिर दसतूर सूं कांई हुवै... जद म्है आखी जिनगी सूंप दी है तो दस्तूर लेय'र कांई करूंला... म्हारी जिनगी रो मोल दस्तूर सूं कैई लाख गुणा बत्तो है।'

'तो थनै कांई चाइजै?... आ चैन ले परी... नींतर दो-तीन साल में थारै कंठी करा दूंला...' वै नशै रै मांय कीं रो कीं बोलता रह्या। म्हैं बीच में ई बोलूं, 'म्हनैं कीं कोनीं चइजै... म्हनैं एक बात रो जवाब चाइजै हैं''

'अेड़ी कांई बात है, सो थनैं आज ई ध्यान में आई।'

'आप दारू पियोड़ा हो।'

'थोड़ोक पियो है...'

'बात थोड़ो कै घणो पीवां री नीं है... बात है जीवण री।'

'तू गैली है... कीं कोनीं फरक पड़ै जीवण माथै।'

'कीकर कोनीं पड़ै... म्है देख नै बैठी हूं दारू पीमण रो नतीजो, म्हारै बापा री मौत।'

'पण थारै बापा तो अणूथोइज दारू पीवता हा... अठै तो कदी-कदास पीवूं हूं... अर आज तो पैली रात है।' उणा नै बात करण रो कीं भान कोनी है..., वै झट सूं म्हारो हाथ पकड़ लियो अर पलंग माथै म्हनै बिठाय दी।

'म्हनैं आ बात दाय कोनी आवै।'

'किसी बात...?'

'दारू पीवण री।'

'अठै रोज कुण पीवै है।'

'इणरो मतलब आप रोज पीवणो चावो... पण अैडी कांई बडाई है दारू मांय... घर रो गुमावणो अर गेळो बाजणो किणी कह्यो' म्हैं आगे कैवती जावूं- 'म्हैं सोच्यो हो कै म्हनै अैड़ो धणी मिलेला, जिण रै साथै म्हारो जीवण सुफल व्हैला... पण एक दारू पीवण आळा सूं म्हैं आ उम्मीद कदैई नीं कर सकूं हूं।'

'अरे भली मिनख, दारूबंदी में दारू मिलै कठै।'

'तो आप कठा सूं पियो।'

'कदी कदास मिल जावै है, डबल पड़सां दियां...।'

'इण भांत तो दारूबंदी कदैई कोनी व्हेला...।' म्है मन ई मन कैवूं हूं- सरकारी कानून सूं तो दारूबंदी कोनी व्हैला क्यूं कै दारू तो घर-घर बणायो जा सकै है। सरकार किण-किण नै जेळ मांय घालैला। दारूबंदी सारू मिनख री मनबंदी जरूरी है। जद मन मांय ओ पक्का इरादो व्है जावैला कै दारू नीं पीवणो है। घर री बरबादी री जड़ ओ दारू दज है, जिण घर में दारू घुस ग्यो, उण घर री मान मरजादा माटी में मिल जावै है। अैड़ा विचारां सूं आपो-आप व्है जावैला।

अेकाअेक उणा रो हाथ म्हारै खवा माथै आवै है, म्हैं उणां री आंख्या मांय देख्यो, आंख्यां हालताई थोड़ी'क राती है। म्हैं उणांरै पगां सूं मोजड़ियां उतारण लागूं हूं तो बै कैवै है, 'तूं सांची ई कैवै है... कै दारू थारै बापा री मौत ही, ओ दारू म्हारी ई मौत बण सकै है... थारै सुहाग नै मिटावण वाळा दारू सूं अबै म्हारो कदैई वास्तो कोनी व्हैला।' कैवता-कैवता उणा री आंख्या थोड़ी'क गीली व्है जावै है।

म्हैं पलंग माथा सूं उठ नै उणा नै पलंग माथै सावळ सूं पोढाय देवूं हूं... अर म्हारै लाल चुनड़ी रै पल्लै सूं आंख्यां पूंछण लागूं हूं...।

शरत् के बोल

जिसने समाज को निरखा और व्यक्ति को परखा

• संसार के सभी स्त्री-पुरुष एक सांचे में ढले नहीं होते, उनके सार्थक होने का रास्ता भी जीवन में एक ही नहीं होता।

• ऐसे लोग ही समाज की अधिक निन्दा करते फिरते हैं जो समाज से कोई सम्बन्ध नहीं रखते। ऐसे लोग न तो अच्छी तरह पराये समाज को जानते हैं न अपने ही समाज को।

• अफसोस तो इस बात का है कि मनुष्य पड़ोसी होकर अपने दूसरे पड़ोसी की जीवन-यात्रा का मार्ग इतना दुर्गम और दुःखमय बना दे सकता है। ऐसी हृदयहीन निर्दय बर्बरता का उदाहरण दुनिया में शायद हिन्दू समाज के सिवा और कहीं न मिले।

• सभ्य समाज ने शायद इस बात को अच्छी तरह समझ लिया है कि मनुष्य को पशु बनाये बिना उससे पशुओं का काम ठीक तौर से नहीं लिया जा सकता।

• जो पीड़ितों की रक्षा नहीं करता, जो दुखियों को केवल दुःख के मार्ग पर ढकेल देता है, उसे ही 'समाज' कहने का हमलोग जो महापाप करते हैं वही हमें रसातल की ओर लिए जा रहा है।

• समाज को चोट पहुंचाना और समाज के दम्भ पर प्रहार करना एक बात नहीं। सभी का एक सच्चा अधिकार होता है। समाज उद्धत होकर जब अपने अधिकार की सच्ची सीमा लांघ जाता है तब उसे चोट पहुंचानी ही पड़ती है। उससे समाज मरता नहीं, उसके होश ठिकाने आ जाते हैं और मोह छूट जाता है।

• सभी कामों में व्यक्ति के अपनी बुद्धि लड़ाने से जैसे समाज नहीं रह सकता, वैसे ही समाज भी अगर सब समय और सभी कामों में अपना मत चलाना चाहे तो उससे मनुष्य टिक नहीं सकता। गलती और अन्याय क्या व्यक्ति से ही होता है, समाज से नहीं।

वे अल्पसंख्यक क्यों कहलाना चाहते हैं ?

✍ घनश्याम देवड़ा, दिल्ली / सम्पादक 'अमृतकुम्भ'

समाज विकास के अप्रैल २००४ के अंक में एक सम्पादकीय टिप्पणी छपी है ''जैन समाज अल्पसंख्यक समाज की ओर।'' पश्चिम बंगाल सरकार जैनियों को अल्पसंख्यक समुदाय घोषित करने जा रही है। सम्पादकीय टिप्पणी में जैनों को हिन्दुओं का अविभाजित अंग भी कहा गया है।

वास्तव में यह बिल्कुल सही है कि जैन, सिक्ख, बौद्ध हिन्दू समाज के अभिन्न अंग सदा से माने जाते रहे हैं। हमारे यहां अग्रवालों में जो जैन हैं वे सरावगी कहलाते हैं जो श्रावक शब्द का अपभ्रंश है। वैष्णव अग्रवालों और जैन अग्रवालों में विवाह सम्बन्ध सामान्य रूप से होते हैं- सदा से होते आये हैं। मेरे छोटे पुत्र गौरीशंकर का विवाह सम्बन्ध एक जैन परिवार में हुआ है। इन्दौर में मेरे ससुराल में मेरे साले की लड़की का विवाह जैन-परिवार में हुआ है। जैन और वैष्णव ऐसा प्रयोग तो होता है। पर जैन और हिन्दू ऐसा प्रयोग नहीं होता। सभी शैव-वैष्णव मन्दिरों में जैनों का प्रवेश वहां तक होता आया है जहां तक ब्राह्मणों का। शिव मन्दिरों में जैन बन्धु भगवान् शिव के शिवलिंग पर अभिषेक सदा से करते आये हैं। जैनों में विवाह मुहूर्त, गृह प्रवेश के मुहूर्त सभी मुहूर्त हमारे ज्योतिष पंचांगों के अनुसार मनाये जाते हैं। ऐसा कुछ भी नहीं है कि हम वैष्णवों को तो हिन्दू कहें और जैनों को अहिन्दू।

लेकिन ऐसा क्यों हो रहा है ? इसका कारण है भारतीय संविधान की धारा २९ व ३०। इन धाराओं के द्वारा अल्पसंख्यकों को विशेषाधिकार दिये गये हैं। धारा ३० के अनुसार अल्पसंख्यकों को अपनी पसन्द (च्वाइस) के शैक्षणिक संस्थान, कालेज, पाठशालाएं स्थापित करने, उनका प्रबन्धन करने का मूलभूत अधिकार प्राप्त है। राज्य और केन्द्र सरकारें उनमें उनके प्रबंध में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं कर सकती। उनका अधिग्रहण, सरकारीकरण नहीं कर सकती। उनका अधिग्रहण, सरकारीकरण नहीं कर सकती। अल्पसंख्यकों को जो अन्य सुविधाएं प्राप्त हैं- वे कुछ इस प्रकार हैं-

१. अल्पसंख्यकों के मन्दिरों, तीर्थों आदि का सरकारीकरण नहीं किया जा सकता। वैष्णवी देवी तथा दक्षिण भारत के मन्दिरों का प्रबन्ध राज्य सरकारों के हाथ में है- वैसा नहीं हो सकता।

> देश के सभी क्षेत्रों में अनेकोनेक अल्पसंख्यक समुदाय मिलेंगे। अत: इस प्रकार की मान्यता से देश की उन्नति व अवनति की राह जाएगी, यह एक महत विचारनीय प्रश्न है।

२. अल्पसंख्यकों द्वारा संचालित ट्रस्टों को भाड़ा नियंत्रण अधिनियम से मुक्ति प्राप्त है। पुराने किराये पर दिये दुकान, कमरों को खाली कराया जा सकता है।

३. अल्पसंख्यकों द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं में उस सम्प्रदाय के लिए ५० प्रतिशत सीटें आरक्षित की जा सकती हैं।

४. अल्पसंख्यकों द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं में उस सम्प्रदाय की धार्मिक शिक्षा दी जा सकती है।

इसी प्रकार की अनेक सुविधाओं के कारण रामकृष्ण मिशन ने अपने को अहिन्दू संस्था घोषित किया था। रामकृष्ण मिशन ने कलकत्ता उच्च न्यायालय में एक याचिका दायर की थी कि उसे एक अहिन्दू अल्प संख्यक संस्था घोषित किया जाए और कलकत्ता उच्चन्यायालय ने उस याचिका को स्वीकार करके उसे अल्पसंख्यक संस्था मान भी लिया था। पश्चिम बंगाल सरकार ने उस निर्णय के विरुद्ध सर्वोच्च न्यायालय में विशेष अपील दायर की और सर्वोच्च न्यायालय ने उस याचिका को स्वीकार करके अपने २ जुलाई १९९५ के ऐतिहासिक निर्णय द्वारा कलकत्ता उच्च न्यायालय के निर्णय को उलट दिया। इस तरह रामकृष्ण मिशन हिन्दू रह गया।

पर यह बात कम महत्व की नहीं है कि स्वामी विवेकानन्द द्वारा स्थापित श्रीरामकृष्ण मिशन ने कलकत्ता उच्च न्यायालय में शपथ पत्र पर यह घोषणा की कि मिशन का अपना एक अलग धर्म है वह धर्म ''रामकृष्ण वाद'' एक स्वतंत्र धर्म है। वह हिन्दू धर्म नहीं है। मिशन का अपना धर्म अलग है, ईश्वर अलग है, और समाज अलग है। यही नहीं उनका यह नया धर्म ईसाइयत और इसलाम के अधिक निकट है। शपथ पत्र में हिन्दू धर्म आचार विचार के विरुद्ध भी बहुत कुछ कहा गया।

मिशन को ऐसा क्यों करना पड़ा ? हुआ यूं कि पश्चिम बंगाल की सरकार ने एक कानून बनाया था जिसके कारण शिक्षा संस्थानों में राज्य सरकार का हस्तक्षेप बढ़ गया था। मिशन जैसी संस्थाओं को अपने सांस्कृतिक-धार्मिक स्वरूप की रक्षा करना कठिन हो गया था। परन्तु अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थाएं इस प्रकार के नियंत्रण और हस्तक्षेप से मुक्त रखी गयी थी। इसलिए मिशन को ऐसा कदम उठाना पड़ा।

भारतीय संविधान की धारा २९ व ३० का पिछले ४० वर्षों में भारी दुरुपयोग किया गया। खासकर ईसाई संस्थाओं ने

इसका लाभ उठाया। दिल्ली के सेंट स्टीफेन कालेज ने अपने को ईसाई संस्था घोषित कराकर कई लाभ उठाये। इस कालेज में ९५ प्रतिशत से भी अधिक छात्र हिन्दू हैं। मोटी फीस लेता है यह कालेज। तो इस तरह अपने देश में बहुसंख्यकों का नहीं अल्पसंख्यकों का राज चल रहा है।

इधर सुना है कर्नाटक में लिंगाचल सम्प्रदाय ने भी अल्पसंख्यक और अहिन्दू समाज घोषित करने की मांग की हुई है। लिंगाचल सम्प्रदाय वैदिक सम्प्रदाय नहीं है- शैवागमों का अनुयायी है और मरने के बाद उस सम्प्रदाय वालों का दाह संस्कार नहीं होता उन्हें जमीन में दफन किया जाता है। तो कल आनन्दमार्ग वाले, फिर ब्रह्म कुमारी सम्प्रदाय वाले, कबीर पन्थी आदि अन्य अनेक भी अपने को अहिन्दू घोषित कर अल्पसंख्यक घोषित करने की मांग करेंगे।

वास्तव में हिन्दू धर्म की परिभाषा करना लगभग असंभव है। कोई तीन-चार या पांच ऐसे लक्षण और सिद्धांत नहीं गिनाये जा सकते जिन्हें हिन्दू धर्म का अंग कहा जाए।

जहां तक जैनों का प्रश्न है, यह समस्या उतनी नयी भी नहीं है। आजादी के बहुत पहले गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने जन मन गण... लिखा था- उसमें ''पंक्ति हैं''

''हिन्दु बौद्ध सिख जैन पारसी मुसलमान क्रिस्तानी।''

उस समय भी एक धारणा प्रचलित थी कि जैन एक अलग धर्म है। संविधान में धारा २९ और ३० के कारण यह धारणा और बलवती हो गई।

यह एक अत्यंत आत्मघाती और विभाजनकारी कदम है। आवश्यक है कि यदि भारत की एकता और अखण्डता की रक्षा करनी है और हिन्दू समाज के अस्तित्व की रक्षा करनी है तो भारतीय संविधान की धारा २९ और ३० को निरस्त किया जाये।●

बातें छोटी - सीख मोटी

१. एक हद तक स्त्री का पहनावा उसके व्यक्तित्व का आइना होता है। इसलिए जब भी घर के किसी सदस्य को चाहे वह पति हो, पुत्र या पुत्री हो, लगे कि ऐसे वस्त्रों को पहनने से शालीनता का उल्लंघन हो रहा है तो वह एक-दूसरे को अवश्य टोके, ताकि परिवार का कोई भी सदस्य बाहर वालों के सामने हंसी का पात्र न बन सके।

२. ''मातृत्व'' प्यार, आनन्द, कोमलता और देखभाल का नाम है। पर प्राय: माताएं कभी-कभी बच्चों पर बुरी तरह बिगड़ जाती हैं एवं डांटती-पीटती हैं। परन्तु आप एक मां का आदर्श 'इमेज' को अपने असंतुलन से चोट नं पहुंचाये।

३. व्यापार-व्यवसाय एवं उद्योग में संलग्न महिलाएं घर, परिवार, पति एवं बच्चों के प्रति अपने कर्तव्य व जवाबदेही को ना भूलें जिससे परिवार के टूटने का अंदेशा ना रहे।

४. हमारे पास अनेक अमूल्य शक्तियों का भण्डार भरा पड़ा है- स्मरण शक्ति, सहन शक्ति, संगठन शक्ति, योग शक्ति, कुण्डलिनी शक्ति, आकर्षण शक्ति, संकल्प शक्ति, शब्द शक्ति, कल्पना शक्ति आदि। आवश्यकता है इन्हें पहचानकर सदुपयोग करने की।

५. बात करते समय कभी भी नजरें नीची ना करें इससे अपराध बोध और झूठ बोलने की आदत झलकती है। साथ ही आत्म-विश्वास की कमी भी जाहिर होती है।

६. प्रारम्भिक कक्षा से बच्चों को ट्यूशन न लगायें। अपने व्यस्त समय में थोड़ा सा समय निकालकर माताएं स्वयं बच्चों को पढ़ायें। बच्चों को 'ट्यूटर रूपी' लाठी का सहारा न दें बल्कि बच्चों के प्रथम गुरू आप स्वयं बनें।

७. तीर्थस्थल पर खाने-पीने की वस्तुएं जैसे सेब फल, गाजर, सीताफल, चावल, शक्कर या अन्य खाद्य सामग्री छोड़ने की बजाय अपने में विद्यमान अवगुणों जैसे काम, क्रोध, मद, लोभ, मिथ्या दूसरों की बुराई करना आदि छोड़ने का संकल्प करें। इससे हमारे गुणों में वृद्धि होगी एवं व्यक्तित्व में निखार आएगा।

एक भारतीय विश्व मानव बने

✍ गिरधारीलाल सराफ

एक भारतीय एक विश्व मानव बने जो विश्व के मानव समाज को मानवता की बात कह सके तो इससे मुझे कितनी खुशी होगी, कोई बताने की बात नहीं। ऐसी कल्पना ही आनन्दित करने वाली है। ऐसे परमानन्द की और कोई कल्पना और कोई भाषा परिभाषा क्या होगी। आज की आवश्यकता की पूर्ति अगर कोई करता है तो वह आज का मानव होगा। कल का मानव आज की पूर्ति करेगा भी कैसे ? जो खुद कल है वह आज होगा कैसे ? जाहिर है कि आज की आवश्यकता आज के मानव से परिपूर्ण होगी। ऐसी परिपूर्णता को पाने के लिए एक भारतीय आगे आये और अपने आप को पूर्णतया मानव समाज के एक मानव के रूप में प्रस्तुत करे तो गौरव क्यों नहीं होगा और क्यों नहीं होना चाहिए ? अगर किसी अन्य समाज में माना कि पशु समाज में ईश्वर के समाज में अगर वही मानव एक स्थान प्राप्त करता है तो सम्पूर्ण मानव समाज को उस समय नाज नहीं होगा ? क्या आर्मस्ट्रांग ने एक दूसरे ग्रह में मानव समाज को नहीं उतारा ? क्या मानव वहां जाकर अमरीकी रहा ? हम सब मानते हैं कि अगर उससे कोई पूछता कि तुम क्या हो तो वह नि:संदेह कहता कि मैं मानव हूं धरती से आया हूं। चन्द्रमा के लोग अगर एक ही समाज के मानव समाज के ही सदस्य होते तो वे और बात नहीं पूछते कि तुम धरती के कौन से देश से आये हो तुम्हारा वेशभूषा, तुम्हारी भाषा कौन-सी है, क्योंकि चन्द्रमा में अगर ऐसा कुछ होता नहीं तो उस प्रश्नकर्ता की परिकल्पना के बाहर की बात होती, ये सारी और उत्तरकर्त्ता को यह कभी कहने का अवसर नहीं मिलता कि वह यूरोप महादेश के अन्तर्गत अन्यान्य और-और देशों की तरह एक अमरीकी देश का निवासी है, अन्यान्य और धर्मों व भाषाओं से विभक्त मानव समुदाय में एक धर्म का धर्मावलम्बी अंग्रेजी भाषा के माध्यम से अपने चिंतन को चित्रित करता है। ना कोई पूछता ना कोई उत्तर देता और यह प्रश्नोत्तर मानव हूं और धरती से आया हूं, यहीं तक होकर प्रश्न और विषयों पर होते तो वहां आर्मस्ट्रांग मानव बना और उसका देश धरती का एक भू-भाग एक हिस्सा, एक शरीर का एक अंग। शायद आगामी कुछ ही वर्षों में आदमी मंगल ग्रह पर भी उतर जायेगा जहां, पानी के स्रोत प्राप्त हुएं हैं।

जब आर्मस्ट्रांग धरती पर आया तो एक भारतीय अजनवी ने पूछा कि तुम कौन हो तो वह कहेगा कि मैं अमरीकी हूं। इसी प्रकार वह अमरीका में जाकर अपनी जाति की उपजाति को बताते हुए परिवार की परिधि में जाते हुए अपने आपको परिलक्षित करेगा और वह आर्मस्ट्रांग बन जाएगा। तो अंत का अंत हुआ शुरूआत की शुरूआत से। विश्व मानव की कल्पना साकार हुई एक मानव के माध्यम से या यूं कहें एक मानव का उदय हुआ या अन्त हुआ विश्व मानव में।

चन्द्रमा में मानव था तब भी वह विभक्त था मनाव के रूप में और धरती पर आया तब भी विभक्त ही रहा अमरीकी बनकर और शेष में वह मानव बन गया आर्मस्ट्रांग के रूप में। लेकिन इसका दूसरा पहलू कि यही आर्मस्ट्रांग मानव बना मानव समाज का प्रतीक विश्व मानव। एक तरफ जहां मानव विभिक्त हुआ वहां वह जुड़ा भी प्राणी समाज से, देवता के समाज से, ईश्वर के समाज से। जुड़ना प्राकृतिक है। हर चीज एक दूसरे से जुड़ी हुई है। हर एक बात अपने आप में अपने ही मूल तत्वों में मिली हुई है। मिलना या जुड़ना उसका स्वभाविक गुण है।

हिन्दू दर्शन ने बुलन्दी के साथ विश्वास के साथ कहा है कह रहा है, क्योंकि यह उसका दर्शन है जो उसे दिखाता है। यह उसकी दृष्टि है या उसका पथ है जिसमें उसका विश्वास है और वह मूल मंत्र, मूल धारा है धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो। ॐ शांति शांति। क्या दर्शन है क्या चिंतन है! आह क्या परिकल्पना है। जिसका ऐसा पथ होगा उसकी मंजिल कैसी होगी ? उसकी मानसिक अवस्था किस आनंद की अनुभूति कर रही होगी। उसका चिंतन कितना चित्रित किया होगा अपने आपको आत्मत्व को।

ऐसे हिन्दू दर्शन को कोई कहे वह संकुचित है, वह सम्प्रदायिक है, सिर्फ हिन्दू की ही सोचता है तो कितनी मूर्खता होगी, कितनी दूरी होगी वास्तविकता से, कितनी अंधकारमय अवस्था होगी आज की ? जो लोग हिन्दू के नाम से, उसके संगठन के नाम से जिनको परहेज है वैसे लोग कभी भी पर-चिंतन नहीं कर पाएंगे क्योंकि कर्म की गति जैसे करने में है वैसे मार्ग की गति राह की गति उसके राहगीरों से है जिन्हें चलना है हर कदम और हिन्दुत्व को मजबूत करना हिन्दू संगठन को मजबूत करना विश्व चिन्तन में विश्व समाज में अपने आपको प्रतिष्ठित करेगा और चन्द्रमा के मानव समाज की परिकल्पना को परिपूर्ण करने में एक सही कदम होगा। और सही पथ माने उसी जगह पहुंचना जहां पहुंचना था। मंजिल के मिलने पर उतनी खुशी होगी उस समय जितनी खुशी तेनसिंह को चोटी पर पहुंच कर हुई थी।

हिन्दुत्व की भावना मानव समाज को मानव बनने में सहायक ही नहीं होगी बल्कि इसके अतिरिक्त और कोई गति नहीं होगी कोई रास्ता नहीं होगा। दत्तक पुत्र अपने नये मां-बाप का तब तक नहीं हो सकेगा जब तक वह अपने पुराने मां-बाप के प्रति श्रद्धावान ना हो। पुराने मां-बाप के प्रति श्रद्धावान पुत्र ही अन्य के प्रति अपने नये मां-बाप के प्रति भी श्रद्धावान होगा। अपने आप में विश्वास अपने धर्म में विश्वास अपनी जाति में देश में विश्वास विघटनकारी नहीं सुसंगठनकारी ही सही विचार धारा है।

विश्व समाज की परिकल्पना को अगर प्रशस्त करता है साकार करता है एक भारतीय, तो किसी को चिंता क्यों ?एक हिन्दू हो किसी को अविश्वास क्यों ?

क्षणबोध : चार बार

- डॉ. ललित शुक्ल
नई दिल्ली

मैंने कब कहा कि
तुम मेरे आंगन को सुरभित कर दो
तुम जब तक घृणा के बीज बोओ
मैं अपना फूलदान संवार लूं।

मैंने कब कहां तुम मेरे गम में
अपनी आंखें नम करो
तुम विश्वास की बस्ती को धोखा दो
मैं इन्सान की ताकत पर
विश्वास कर लूं।

मैंने कहां कहा कि
तुम मुझे रोशनी का एक कण दे दो
तुम जब तक अंधेरे के धुएं से
अपना मुंह मलो
मैं अपना माटी का दीया सम्हाल लूं।

मैंने कब कहा कि
तुम मुझे रोटी दे दो
जब तक तुम मेरे ऊपर तरस खाओ
मैं अपने पसीने को आवाज दे लूं!

नया समाज

- युगल किशोर चौधरी
चनपटिया (बिहार)

गढ़ना नया समाज हमें है, गढ़ना नया समाज।
हम महान पुरुषों के वंशज,
जिनकी सुन्दर नीति निराली।
छलकाते जो रहे हमेशा,
विष पीकर अमृत की प्याली।।

बना सभी को सुखी, समुन्नत, लाना शीघ्र सुराज।
बध कर दें दहेज दानव का,
रूढ़िवादिता मिलकर तोड़ें।
समता, ममता घर छलका कर,
समरसता से नाता जोड़ें।।

प्रगति मार्ग पर बढ़ते जाना, कदम मिलाकर आज।
आडम्बर, पाखंड मिटाकर,
मिलकर लाना नया जमाना।
शिक्षा है विकास की कुंजी,
घर-घर ज्ञान प्रदीप जलाना।।

स्वर्णिम है इतिहास हमारा, जिस पर सबको नाज।
शांति अहिंसा को धारण कर
त्याग-तपस्या को अपनाना।
बंधु भावना को कर विकसित
उच्च शिखर पर चढ़ते जाना।।

मानवता हो साध्य हमारी, गूंजा दें आवाज।
गढ़ना नया समाज हमें है, गढ़ना नया समाज।।

कॉफी के कप के सानिद्ध में

✍ बुधमल शामसुखा, नई दिल्ली

कॉफी के पहले दौर की समाप्ति ने बातचीत में अधिक ताजगी ला दी। टेबल पर बेतरतीब बिखरे पॉट सॉसर कप प्लेट और चीनी के छोटे-छोटे दोनों की अवमानना सी करते हुए सोम ने व्याख्यानदाता के लहजे में कहा।

''मुझे ब्राह्मण मात्र से सख्त नफरत है। वह हमारी सांस्कृतिक नपुंसकता, धार्मिक अन्धविश्वास और जातीय असमानताओं का जीवन्त प्रतीक है। जातिभेद, वर्णभेद, धर्मभेद अर्थात् राष्ट्रीय मतभेद का नियामक ब्राह्मण भारत का महान् शत्रु है। जनता के साथ की गई इसकी गद्दारी की कहानी हमारी मानसिक गुलामी का काला इतिहास है।''

सोम की इस विकथा से गोपेश का ब्राह्मणत्व तिलमिला उठा। उसका परम सनातनी मन भीतर ही भीतर उबलने लगा। उसने आवेश के साथ कहा-

''अगर गालियां देने से ही देश और जाति का उद्धार होता हो तो अपने सिद्धान्तहीन गुरु घण्टाल कम्युनिस्टों की काली करतूतों की तरफ से आंख क्यों मूंदते हो? पोलैण्ड और हंगरी के साथ किया गया उनका अमानवीय व्यवहार क्या इतिहास भूल सकता है? भारत की परम्परागत सांस्कृतिक व्यवस्था पर आघात करने के पूर्व भारत के मनीषियों की वाणी का अगर तनिक भी अध्ययन किया होता तो महाशयजी को इन विदेशी म्लेच्छों के तलवे नहीं सहलाने पड़ते।''

कहने को तो कह गया लेकिन गोपेश को समझते देर नहीं लगी कि सोम की बात के साथ साम्यवाद का कोई सम्बन्ध नहीं है। वह आगे बढ़ना ही चाहता था कि विष्णुकान्त ने कैफियत दरयाफ्त कर ली, ''गोपेश भाई, आखिर आप कहना क्या चाहते हैं?''

गोपेश कुछ नम्र पड़ा। लेकिन अपना कथन जारी रखते हुए बोला, ''हम भारतीय तो मनुष्य मात्र को ही समान मानते हैं। सभी ब्राह्मण, वैश्य और शूद्र का वर्ण चतुष्टय अपने-अपने कार्य को लेकर ही किया गया है। ब्राह्मणों से नफरत और अन्यों से प्रेम का तो कोई अर्थ ही नहीं होता। महर्षि वेदव्यास ने मनुष्य की श्रेष्ठता की स्पष्ट स्थापना की है। उन्होंने कहा है-

''गुह्यं ब्रह्म तदिदं ब्रवीमि
नहि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित।''

(मैं तुम्हें एक भेद भरी बात बताता हूं कि मनुष्य से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है।)

महाभारत प्रणेता व्यास के श्लोकार्ध का वेणी पर गम्भीर प्रभाव पड़ा। उसका रोम-रोम खिल उठा। मानो पूर्वापर सम्बन्ध निर्वाह करते हुए ही उसने कहा, ''शबार ऊपरे मानुष सत्य ताहार ऊपरे नाई।'' अहहा! बंगाल के प्रसिद्ध कवि चण्डीदास ने तो व्यास के साथ ही जैसे कण्ठ स्वर मिला दिया है। भगवान् बुद्ध और महावीर का तो जन्म ही जाति-प्रथा के नाश के लिए हुआ था। महात्मा कबीर तो और भी आगे बढ़े। उन्होंने निर्णय की भाषा में कहा, ''जात पांत पूछे नहिं कोई, हरि को भजै सो हरि का होई।'' और युगद्रष्टा गान्धी ने अस्पृश्यता को हमारे राष्ट्रीय जीवन का कोढ़ बतलाया है।''

पूर्वजों की गुण गाथा में भावाविष्ट वेणी की बात में व्याघात डाला विष्णुकांत ने। अधिक समय तक चुप रहना उसके स्वभाव-विरुद्ध है। हर स्थान और हर समय 'मजाक' खोज लेने में सिद्ध होने के कारण ही वह अपने आप को 'रिसर्च स्कॉलर' समझता है। अपनी 'रिसर्च बुद्धि' के अन्दाज की गम्भीरता आंकते हुए उसने कहा-

''व्यास और कबीर का मानव-श्रेष्ठता का कथन उनकी हीन भावना (इन्फीरियॉरिटी कॉम्प्लेक्स) छिपाने का बहाना मात्र है। द्वैपायन व्यास स्वयं सत्यवती पराशर की अवैध सन्तान थे। और यही कारण है कि उन्होंने सम्पूर्ण महाभारत को वर्णसंकरों की जीवन-गाथा का महाकाव्य बना डाला। कबीर किसी विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से उत्पन्न आधे हिन्दू आधे मुसलमान थे। अपने व्यक्तित्व की रक्षा के लिए वे तो अश्लील भी बकते थे। एक जगह तो कहने लगे 'ब्राह्मण है तू ब्रह्मणी जाया, तो और राह तैं क्यों नहीं आया?''

विष्णुकान्त की नयी व्याख्या से सोम पुलकित वेणी-शंकर कुछ गम्भीर और गोपेश उग्र हो गये। बात पकड़ी गोपेश ने, ''क्यों बन्धु! बुद्ध, महावीर और गान्धी से बच कर निकल गये!''

विष्णुकान्त की प्रत्युत्पन्न मति ने चैलेंज स्वीकार किया। बोला, ''गोपेश, मैंने जानबूझ कर ही तुम्हारे लिए कुछ प्वाइंट छोड़ दिये हैं। अगर सच पूछो तो वर्णाश्रम धर्म की स्थापना स्वयं अपने में ही हमारी रक्त-अशुद्धता का प्रमाण है। हमारे पूर्व तो सचमुच मिश्रित-रक्त अवैध सन्तानों की सन्तान हैं। अपने वंशजों की पोल न खोलना ही ठीक है, अन्यथा तुम्हारे सब महामना महापुरुष कॉफी हाउस के बेयरों के साथ खड़े नजर आयेंगे।''

वेणीशंकर का गाम्भीर्य भंग हुआ तो उसने पूछा, ''आखिर इस जातिवाद का मूल कहां खोजें? इतिहास का कौन-सा क्रम-विकास इस प्रथा का जनक रहा है?''

सोम हंस पड़ा, ''इसकी जड़ गोपेश जैसे ब्राह्मणवादियों की खोपड़ी में है और वहीं से निकल कर इसका रस हमारे देश के संस्कारों में रम गया है।''

बात आगे बढ़ायी विष्णुकान्त ने, ''अगर इसका प्रमाण चाहिए तो किसी आदमकद शीशे के सामने खड़े होकर अपने नाक नक्श का निरीक्षण कर लो भाई! द्राविड़ आर्य शक हूण सिथियन यवन पठान मुगल देशी परदेशी सबका सम्मिश्रित पंचामृत अवलेह मिल जाएगा। हमारे शास्त्रों ने भी इसी की महिमा गाई है। कहां है 'उच्छिष्टं जगत् सर्वम्' अर्थात्

समस्त संसार ही 'रक्त मिश्रण' है।''

उच्छिष्ट की इस नयी खोज ने पास पड़ी टेबल पर बैठे कॉफी प्रेमियों तक को चौंका दिया। सोम ने कहा, ''जीवन व्यवहार में 'दर्शन' इसी को कहते हैं।''

शायद विष्णुकान्त के इशारे से ही टेबल पर नये कप लग चुके थे। प्रथम दौर की गर्मी उतर चुकी थी और सबके हाथ अपना-अपना कप तैयार करने में इस प्रकार लग रहे थे मानो समुद्र-मन्थन के समय देवासुरों के हाथ चल रहे हों।

विष्णुकांत ने कॉफी 'सिप' करते हुए धीरे से बात छेड़ी, ''अगर जातिप्रथा को समूल नष्ट करना हो तो देश के कोने-कोने में कॉफी हाउस स्थापित कर दिये जाने चाहिए।''

सोम ने व्यंग्य कसा, ''और दलित वर्ग की बस्तियां नगरपालिका क्षेत्रों के बाहर बसा दी जानीं चाहिए। वहां हमारे नये 'अमीर उमरा' अर्थात् 'मिनिस्टर' लोग कभी कभार तफरीह के लिए जाया करें और वर्गविहीन समाज रचना पर अपने रटे हुए भाषण दे आया करें।''

वेणीशंकर ने गहरी सांस लेते हुए मौन भंग किया, ''यह सब हो क्या रहा है? संविधान में दलित वर्ग को अलग सीटें देकर, शहरों में उनकी अलग बस्तियां बसा कर और जीवन में अलगाव रखकर आखिर हम कौन-सा नाटक खेल रहे हैं?''

गोपेश ने तीव्रता से कहा, ''बात साफ है। हमारी परम्पराएं आज भी जीवित हैं। हमारा जातीय अभिमान मर नहीं गया है। हमारे पुरखाओं की बनाई मर्यादाएं आज भी हमारी रक्षा कर रही हैं। ब्राह्मण आज भी निस्तेज और जड़ नहीं हो गया है! हम सब भंगी नहीं हो गये हैं।''

गोपेश की बात अनसुनी-सी करते हुए वेणी बोला ''सिद्धान्त और व्यवहार, कहन और क्रिया का ऐसा वैषम्य शायद विश्व के किसी धर्म या जाति में नहीं मिलेगा।''

सोम ने हामी भरी, ''और यह तब तक रहेगा जब तक हमारे सोचने का तरीका आमूल नहीं बदल जाएगा। घर और बाहर को देखने वाली हमारी आंखें एक नहीं हो जाएंगी।''

विष्णुकांत चिहुंका, ''जब तक हमारी आंखें एक होंगी कॉफी हाउस के कपाट लग चुके होंगे। जातिहीन समाज की रचना जब होगी, हो जाएगी, कॉफी हाउस की परम्परा अटूट रहनी चाहिए। हम इसी टेबल पर बैठकर विश्वविजयी बन जाएंगे।''●

सज्जनता का काढ़ा

- श्रीमती सरोज लोढ़ा, बर्नपुर

''मृदुल हंसी से अपना प्यारा, संसार सजाएं,
बने राष्ट्र का गौरव हम सब, सुन्दर छवि बनाएं।''

यदि आप सज्जन बनना चाहते हैं तो निम्नलिखित काढ़े का सेवन करने से अपने आप सज्जनता आने में देर नहीं लगेगी -

आवश्यक सामग्री -

१. सच्चाई के पत्ते- १ तौला
२. ईमानदारी की जड़ - ३ तौला
३. उदारता का अर्क - ३ तौला
४. परोपकार का बीज - ५ तौला
५. सत्संगत का रस - १ तौला
६. रहम दिल का छिलका - ४ तौला
७. स्वदेश प्रेम का रस - ५ तौला
६. दानशीलता का सिरका - ७ तौला

बनाने की विधि

उपर्युक्त सब चीजों को एक साथ मिलाकर परमात्मा की हांडी में डालकर स्नेह भाव के चूल्हे पर रखकर, प्रेम की अग्नि में पकायें फिर अच्छी तरह से पक जाने पर नीचे उतार कर ठंडा करें। फिर शुद्ध मन के कपड़े से छान कर मस्तिष्क की शीशी में भर लें।

सेवन विधि

इसको प्रतिदिन संतोष के गुलकंद के साथ इंसाफ की चम्मच से तीन बार सुबह-दोपहर एवं शाम को सेवन करें।

परहेज

क्रोध की मिर्च, अहंकार का तेल, लोभ की मिठाई, स्वार्थ का घी, धोखे का पापड़, इन सबसे सावधान एवं दुराचरण की भावना से बचना।

गजल

- श्यामसुन्दर बगड़िया

चिनगारियां ही जिन्दगी अब इसे हरसू सजा लो।
और कुछ हासिल नहीं तो कफस अपनाखुद जला लो।।

प्यार की कसमें तुम्हारी कागजों की नाव कोरी।
बेखबर जो हम चढ़े हैं शौक से खुद को डुबा लो।।

तुम बनी मंजर खुद हो अर्श पर ही रह गई हो।
गुल हुआ मंजर खुद हो अर्श पर ही रह गई हो।
गुल हुआ होश-ओ खिरद है गम नहीं मजनू बना लो।।

गूंज में शहनाइयों की बेवफाई की सदा है।
है फना साजे-तमन्ना मर्सिया की धुन बजा लो।।

कैसे करें सरहे-मुहब्बत खा गये धोखा सनम।
'श्याम' अब है कैफकैसा खुदकुशी अरमां बना लो।।

देवर्षि नारद की लेटेस्ट धरती-यात्रा

✍ रामनारायण उपाध्याय

एक दिन पत्रकार-प्रवर नारद जी महाराज अत्यन्त चिन्तित हो भगवान के पास पहुंचे और बोले, ''हे भगवान् धरती और स्वर्ग के सम्बन्ध बिगड़ते ही जा रहे हैं, और मनुष्य बजाय स्वर्ग में आने के मंगल और चंद्रलोकों में जाने की तैयारी कर रहा है। स्वर्ग के प्रति लोगों में आस्था घटती जा रही है। और हमारे कारागार नर्क के प्रति भी धरती पर अनेकों गलत-फहमियां फैली हुई हैं। विभिन्न अवतारों द्वारा बार-बार यह समझाए जाने पर भी कि 'सुई के छेद में से भले ही ऊंट निकल जाये लेकिन पूंजीपति का स्वर्ग में प्रवेश पाना असम्भव है' कुछ लोगों के द्वारा निरन्तर यह प्रचार किया जा रहा है कि हिल स्टेशनों की तरह स्वर्ग तो महज पूंजीपतियों का विश्रामागार है जहां श्रम का कोई मूल्य नहीं, और मजदूर कॉलोनी की तरह उन्होंने नर्क के नाम पर एक ऐसी बस्ती बसा रखी है जिससे स्वर्ग की ऐश्वर्य वृद्धि के लिए जबरन श्रम लिया जा सके। अतएव वे एक ऐसे लोक की खोज में हैं, जहां मनुष्य-मनुष्य की तरह रह सके। चन्द्रलोक की तरफ छोड़ा गया उनका यह रॉकेट इसी दिशा में एक विनम्र प्रयास है।

फिर कुछ सोचते हुए नारद बोले, ''भगवान यदि मनुष्य ने चन्द्रलोक में प्रवेश पा लिया तो स्वर्ग का कोई मूल्य नहीं रह जाएगा। और मेरा विश्वास है मनुष्य अपने प्रयत्न में अवश्य सफल होगा। उसके अदम्य साहस पर मैं मुग्ध हूं। और सच बात कहने के लिए यदि मुझे क्षमा करें-कारण, नग्न सत्य कहने की वजह से ही मैं धरती पर 'लड़ाने वाले' नारद के नाम से बदनाम हूं- तो मैं यह कहूंगा कि स्वर्ग में रहते-रहते आदमी आलसी हो गया है। सदियों तक स्वर्ग में रहने के बाद भी आज तक स्वर्ग के किसी महानुभाव ने किसी अन्य लोक की यात्रा करने अथवा किसी एक भी नये लोक को खोज निकालने का साहस नहीं किया, जबकि धरती पर रेंगने वाला यह नन्हा-सा दोपाया जीव मंगल और चन्द्र लोकों में जाने की तैयारी कर रहा है। धरती के वैज्ञानिक ही नहीं, सर्वथा अवैज्ञानिक प्राणी कवि तो युगों से चांद के उपासक रहे हैं। उनकी मान्यता है कि बजाय स्वर्ग के चन्द्रलोक में ही उनकी प्रेयसी का निवास है। धरती के बच्चे भी चांद में ही अपने मामा का घर मानते आये हैं। इस तरह धरती पर चन्द्रलोक के प्रति आकर्षण बढ़ता ही जा रहा है। अतएव हे भगवान् यदि हमने गम्भीरता पूर्वक इस प्रश्न का विचार नहीं किया तो यात्रियों के अभाव में आर्थिक संकट से घिर जाने वाले कश्मीर एवं मसूरी की तरह स्वर्ग की स्थिति हो जाने वाली है।''

फिर तनिक व्यग्र होकर वे बोले, ''मनुष्य के सिर्फ चन्द्रलोक में ही जाने का प्रश्न हो ऐसी बात नहीं है, आज तो वह स्वर्ग के हर काम में बाधा डालने पर तुला हुआ है। इस बीसवीं सदी में उसने एक नवीन प्रयोग किया है, दशमलव पद्धति का। इसके अनुसार अब धरती का हर काम बजाय नौ के दस इकाइयों में सम्पन्न होगा। मसलन अब नौ ग्रहों के बजाय दस ग्रह होंगे और नौ रस के बजाय दस रस होंगे। यदि यही स्थिति रही और मनुष्य ने बजाय नौ के दस माह में जन्म लेने का निश्चय कर लिया तो हमारी तो मुश्किल हो जाएगी। इधर से हमने आदमी भेजा और उधर उसने उसे दस माह के पूर्व धरती पर लेने से इन्कार कर दिया तो हमें उसके एक माह अधर में ही ठहरने के लिए एक नये लोक की सृष्टि करनी होगी। अतएव भगवान् हमें इन सब समस्याओं का कोई स्थाई हल खोजना है।''

भगवान् मुस्कुराकर बोले, ''नारद मुझे तुम्हारी कुशाग्र बुद्धि पर विश्वास है। स्वर्ग पर जब-जब भी संकट आया तुमने समय पर उसकी सूचना देकर उसे सुलझाने में अपना अपूर्व योगदान किया है। धरती पर तुम भले ही 'लड़ाने वाले' नारद के नाम से बदनाम हो, लेकिन स्वर्ग के लोग तो तुम्हें ''शान्तिदूत' के नाम से ही याद करते आये हैं। अतएव जिस क्षण तुमने स्वर्ग पर संकट आने की बात कही उसी क्षण मैं यह भी समझ गया था कि उस संकट से मुक्ति का भी कोई उपाय तुम खोज लाये हो।''

नारद बोले, ''भगवान् आप तो अन्तर्यामी हैं, मुझे क्यों शर्मिन्दा कर रहे हैं! जब आपने पूछा ही है तो अपने मन की बात बताता हूं। यदि आप आज्ञा दें तो मैं कुछ समय धरती पर जाकर वहां की स्थिति का अध्ययन कर आऊं।''

भगवान् ने 'एवमस्तु' कह कर अपनी स्वीकृति दे दी।

नारद जैसे ही धरती पर पहुंचे एक आदमी ने तपाक से आप से हाथ मिलाया।

अचकचा कर नारद ने पूछा, ''आपका परिचय ?''

वह बोला, ''मैं यहां का सांस्कृतिक राजदूत हूं। प्रत्येक देश से दूसरे देशों का सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित कराना मेरा कार्य है। आपके आने का पता मुझे 'वाएरलेस' से लग चुका था तथा आपकी शकल का आभास भी मैं 'टेलीविजन' से पा चुका हूं। समस्त मनुष्य जाति की ओर से मैं आपका स्वागत करता हूं।''

इसके बाद उन्हें एक विशाल दफ्तर में ले जाया गया। वहां के एक पदाधिकारी ने स्वागत करते हुए कहा, ''देखिए यहां पर लगे हुए चार्टों पोस्टरों एवं रिपोर्टों से आप समूची मानव जाति के विकास का अध्ययन कर सकते हैं। फिर सामने लगे हुए एक फोटो की ओर इशारा करते हुए कहा, ''यहां के लोग इतने खुशहाल हैं कि अपने बचे हुए समय में इस तरह नाच-गान करके आनन्द मनाया करते हैं।''

नारद ने देखा फोटो की रंगीनी तथा चिकनाहट के बावजूद भी लोक-नृत्य देखने के लिए उपस्थित जनता के फटे हुए कपड़ों से गरीबी झांक-झांक पड़ती थी। कुछ ऊबते हुए से नारद ने कहा, ''मैं विकास योजनाओं के बारे में नहीं, मनुष्य की वास्तविक प्रगति के बारे में जानना चाहता हूं। क्या आप मुझे बता सकेंगे कि इस युग में मानव ने कितनी प्रगति की है ?''

तत्काल उन्हें एक आण्विक केन्द्र ले जाया गया।

नारद ने पूछा, ''यह क्या है ?''

बताया गया, ''यह अन्तर-महाद्वीप रॉकेट है। मनुष्य ने आज इतनी प्रगति की है कि इस एक जगह बैठे-बैठे आधी

दुनिया का नाश किया जा सकता है।''

नारद ने तनिक नाराज होकर कहा, ''क्या आपने एक चौथाई दुनिया के भी निर्माण का कार्य किया है?''

पदाधिकारी ने कहा, ''शायद आप मानव जाति के अर्थशास्त्र से परिचित नहीं। आधी दुनिया का नाश होने से शेष आधी दुनिया का निर्माण आप ही हो जावेगा।''

सुनते ही नारद एक क्षण भी वहां टिक नहीं सके और उनका मन धरती से ऐसा उचटा कि वे उलटे पांव स्वर्ग लौट गये।

भगवान् ने मुस्कराते हुए पूछा, ''क्यों नारद मजे में तो हो? अभी से लौट आये।''

बोले नारद, ''लौट आया यही क्या कम गनीमत है। यदि वे मुझे भी 'वैदिक काल का मनुष्य' की स्लिप लगाकर किसी अजायबघर में रख देते तो मैं उनका क्या कर लेता! लेकिन भगवान् अब हमें स्वर्ग के बारे में चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं। मनुष्य ने जो भी प्रगति की है उससे स्वर्ग के आयात-निर्यात में फर्क पड़ने वाला नहीं है। अतएव यदि वे मंगल और चन्द्र लोकों में जाना चाहते हैं तो उन्हें नि:संकोच जाने दीजिए। वहां से उनके सीधे स्वर्ग में आने का मार्ग मैं देख आया हूं।''

और वे दोनों मुस्कुरा कर अन्तर्ध्यान हो गये।●

म्हारे देस

- शम्भु चौधरी, कलकत्ता

कठे से आया रे, कठे थे जाओ रे
एक बार देखने म्हाने भी आओ रे।
केरीयों रे खेत, सांगरी बुलयो रे,
फॉफरो रे खेत, बाजरो बचाओ रे।
कठे से थे आया रे, कठे थे जाओ रे
एक बार देखने म्हाने भी आओ रें।
शेखावटी री हेल्यां, जोधपुर री छाया,
बालू री टींला पें, पानी कोनी पाया रे,
रूंधती आवाज सूं, आंसू कौणी गिरे रे,
थे तो म्हाने भूल गया, म्हैं कंईयां भूला रे,
एक बार देखने, म्हाणे भी आओ रे।
देस भूला, भेष भूला,
भासा कंईयां भूला रे,
म्हाणे थे भूल गया, घर कंईयां भूला रे,
छोड़-छोड़-छोड़, एक बार आओ रे,
माताजी रीं माटी णे माथा सूं लगाओ रे,
एक बार देखणे म्हाणे भी आओ रे।

मेघ

- घनश्याम गुप्त, भोपाल

कृषकों के जीवन तुम हो,
हो चातक की तुम प्यारी आन।
वृक्ष लताओं की हो जीवन
मोरों की हो तुम घन प्राण।।
ग्रीष्म तपित हो जीव जगत के,
जब ब्याकुल हो जाते है।
पाकर नम में दरश तुम्हारा,
अपने भाग्य सराहते हैं।
आता देख तुम्हें दूर ही,
दूर उष्णता जाती भाग।
वर्षा की आशा करती तब,
ठंडी मेदिनी की आग।।
आशा करते कभी निराश तुम,
कभी निराशा में भी आस।
कारण यही न जग का प्राणी,
करता तुम पर है विश्वास।।
बनकर चोर छिपाये नीर निधि
भागे जाते जल्द कहां?
दौड़-दौड़ विद्युत प्रकाश में,
लखते तुमको लोग वहां।
गड़गड़ाहट की घोर घुमड़
क्या है यह पग ध्वनि तेरी।
या करने संग्रह सैनिक
नभ ने बजाई है यह भेरी।।
छिपा सके ये अगणित मोती,
भय से उन्हें गिराते हो।
जा कर दया दरिद्र देश पर,
मुक्ता मोती बरसाते हो।।
दामिनी नहीं लख दशा देश की
मन ही मन दुखियाते हो।
होकर नीर रूप यह
अश्रुधर बहाते हो।।

युग पथ चरण

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

मारवाड़ी समाज की उभरती नयी छवि : रामनिवास मिर्धा

मारवाड़ी राजनीति में आगे आयें : सुमित्रा सिंह

मारवाड़ी समाज अब सिर्फ व्यापारी समाज नहीं रहा है उसने साहित्य, संस्कृति, शिक्षा एवं विज्ञान के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त की है। मारवाड़ी समाज की एक नई तस्वीर उभर रही है' - ये शब्द हैं कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री रामनिवास मिर्धा के जो अपने सम्मान में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आयोजित एक रात्रि-भोज समारोह में बोल रहे थे।

इस अवसर पर उपस्थित विशेष अतिथि श्रीमती सुमित्रा सिंह, अध्यक्षा, राजस्थान विधानसभा ने मारवाड़ी समाज को राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए आह्वान किया।

श्री मिर्धा ने कहा कि मारवाड़ी सम्मेलन से उनका बहुत पुराना संबंध है एवं सम्मेलन प्रवासी मारवाड़ियों के बीच वर्षों से महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। श्री मिर्धा ने देश के अर्थिक एवं औद्योगिक विकास में मारवाड़ी समाज की भूमिका की सराहना करते हुए नई पीढ़ी से उद्योग के साथ साथ सामाजिक दायित्वों को भी निभाने के लिए अपील की। श्रीमती सिंह ने प्रवासी मारवाड़ियों को राजस्थान के आर्थिक विकास में अपनी भूमिका निभाने के लिए आमंत्रित करते हुए पूर्ण सरकारी सहयोग का आश्वासन दिया। श्रीमती सिंह ने श्री मिर्धा को देश का एक बिरल प्रबुद्ध एवं शुद्ध नेता बताया।

सम्मेलन के उप-सभापति श्री सीताराम शर्मा ने सम्मेलन के उद्देश्यों एवं कार्यक्रमों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सम्मेलन अपने मुख्य उद्देश्यों - समाज सुधार, समाज सुरक्षा एवं सामाजिक समरसता- के लिए पिछले कई वर्षों से अनवरत कार्य कर रहा है। सम्मेलन प्रवासी मारवाड़ी समाज की एकमात्र सर्व भारतीय प्रतिनिधि संस्था है।

अध्यक्षीय भाषण में सम्मेलन के सभापति श्री मोहनलाल तुलस्यान ने राजस्थानी भाषा की संवैधानिक मान्यता का जोरदार शब्दों से प्रश्न उठाते हुए नेताओं से सम्पूर्ण सहयोग की अपील की। श्री तुलस्यान ने पगड़ी पहनाकर श्री मिर्धा का स्वागत किया एवं श्री प्रह्लाद लाटा ने श्रीमती सिंह को शॉल भेंट किया। आरम्भ में सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने श्री मिर्धा एवं श्रीमती सिंह का स्वागत किया एवं उम्मीद जताई कि सम्मेलन को सदैव उनका सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त होगा। सम्मेलन के पूर्व सभापति श्री नन्दकिशोर जालान ने सम्मेलन के मुखपत्र 'समाज विकास' की प्रतियां दोनों विशिष्ट अतिथियों को भेंट की। इस अवसर पर विश्वमित्र के सम्पादक श्री प्रकाशचंद्र अग्रवाल विशेष रूप से उपस्थित थे।

इस अवसर पर पश्चिम बंगाल मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री लोकनाथ डोकानिया, आन्ध्र प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री रामनिवास गुप्ता एवं पूर्वोत्तर प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व उपाध्यक्ष श्री वेणीशंकर शर्मा ने विशेष रूप से दोनों अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया।

समारोह में शहर के गणमान्य व्यक्ति बड़ी संख्या में उपस्थित थे जिनमें प्रमुख थे- सर्वश्री इन्दरचंद संचेती, दीपचंद नाहटा, लोकनाथ डोकानिया, काशी प्रसाद झुनझुनवाला, संजय बुधिया, प्रह्लाद राय अग्रवाल, अरुण गुप्ता, नन्दलाल सिंघानिया, ओमप्रकाश पोद्दार, सांवरमल अग्रवाल, राजाराम शर्मा, राजकुमार बोथरा, नरेश अग्रवाल, मुरारीलाल डालमिया, प्रह्लाद लारा, विश्वनाथ गुप्ता, नरसिंह लाल गुप्ता आदि।

सम्मेलन अध्यक्ष मोहनलालजी तुलस्यान द्वारा पगड़ी पहनाते हुए।

सम्मेलन के निवर्तमान अध्यक्ष नन्दकिशोर जालान द्वारा

सम्मेलन के भूतपूर्व महामंत्री श्री दीपचंद नाहटा द्वारा

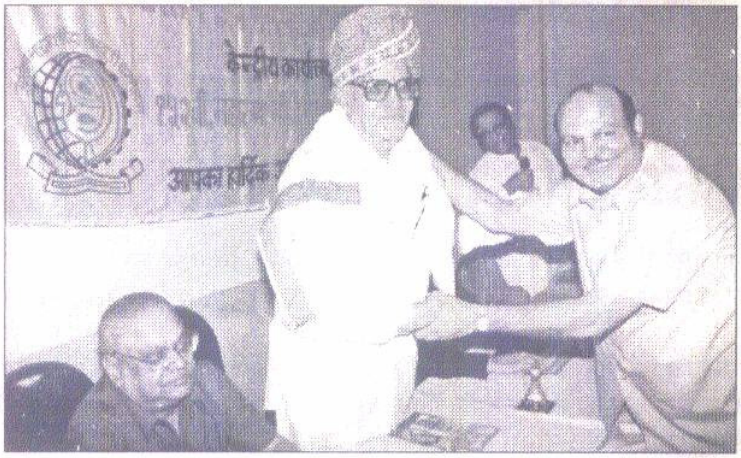

विशिष्ट अतिथि श्री लाटा द्वारा

भूतपूर्व कोषाध्यक्ष श्री इन्द्रचन्द संचेती द्वारा श्री प्रकाशचंद्र अग्रवाल का अभिनन्दन

उपस्थिति का छोटा सा अंश

'नयी सरकार, नयी उम्मीदें विचार गोष्ठी पत्रकारों की नजर में

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा २९ मई २००४ को 'नई सरकार नयी उम्मीदें, विषयक एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी को कोलकाता महानगर से प्रकाशित चार हिन्दी समाचार पत्रों के सम्पादकों ने सम्बोधित किया।

विषय प्रस्तुत करते हुए सम्मेलन के उपाध्यक्ष एवं गोष्ठी के सूत्रधार श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि चुनाव के नतीजों ने सबको चौंका दिया - कांग्रेस को भी एवं भाजपा को भी। ये अप्रत्याशित परिणाम न तो भाजपा की करारी हार थी, न ही कांग्रेस की भारी विजय। कांग्रेस एवं भाजपा दोनों के वोट-शेयरों में करीबन १.५ प्रतिशत की कमी आई।

वक्ताओं के समक्ष प्रश्न रखते हुए श्री शर्मा ने कहा कि सोनिया गांधी ने प्रधानमंत्री का पद क्यों नहीं स्वीकार किया एवं ३२० सदस्यों के संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन में कांग्रेस की ताकत सिर्फ १४५ है ऐसी स्थिति से सरकार की स्थिरता कहां तक है। क्या कांग्रेस जिसे गठबंधन सरकार चलाने का कोई अनुभव नहीं है वह १४ दलों के साथ गठबंधन का धर्म कहां तक निभा सकेगी।

श्री शर्मा ने कहा कि स्वतंत्रता के उपरान्त पहली बार वामपंथी दल इतनी बड़ी ताकत ६३ लोकसभा सदस्य के रूप में उभर कर आये हैं- इसका क्या प्रभाव होगा। आर्थिक सुधार की दिशा एवं रफ्तार, विनिवेश, निजी क्षेत्रों में रोजगार का आरक्षण आदि विषयों पर समर्थक दलों में गहरे मतभेद हैं एवं न्यूनतम साझा कार्यक्रम न्यूनतम सहमति एवं अधिकतर समझौते पर आधारित हैं। इस सरकार से भारी उम्मीदें हैं जिन्हें पूरा करना एक बड़ी चुनौती होगी।

१९९१ में जब कांग्रेस को सत्ता मिली थी तब देश की अर्थ व्यवस्था जर्जर थी, सोना गिरवी रखा गया था लेकिन आज ८ प्रतिशत से अधिक की विकास दर एवं ५ लाख करोड़ रुपयों के विदेशी मुद्रा के भंडार से आर्थिक स्थिति बहुत मजबूत है।

श्री शर्मा ने कहा कि आज की गोष्ठी में दो मुद्दे हैं- नई सरकार का क्या रूप एवं स्वरूप होगा, कितनी स्थिर होगी एवं उसके मुख्य कार्यक्रम क्या होंगे। दूसरा मुद्दा है नयी सरकार से बहुत सी नयी उम्मीदें हैं- समाज के विभिन्न लोगों की विभिन्न उम्मीदें हैं। किसान पानी बिजली के अतिरिक्त फसल का उचित मूल्य चाहता है जिससे उसे आत्महत्या नहीं करनी पड़े। अल्पसंख्यक सुरक्षा एवं सम्मान चाहता है, बेरोजगार युवक रोजगार की उम्मीद लगाये बैठा है तो महिलाएं ३३ प्रतिशत आरक्षण की प्रतीक्षा में हैं। उद्योग ८ प्रतिशत की विकास दर के साथ-साथ बढ़ता शेयर का सूचकांक खोज रहा है। मध्यमवर्ग, महंगाई से बचना एवं अपनी बचत पर ऊंची ब्याज दर की आस लगाये बैठा है तो गृहिणी एल.पी.जी का दाम नहीं बढ़ाना चाहती। इन उम्मीदों पर सरकार कितनी खरी उतरेगी इन पर बातचीत करनी है। श्री शर्मा ने यह कहते हुए विचार गोष्ठी का श्रीगणेश किया।

सन्मार्ग के सम्पादक **श्री रामअवतार गुप्त** ने कहा- एक्जिट पोल की असफलता से लेकर सोनिया गांधी के रहस्यमय निर्णय के बाद केन्द्र में नवगठित सरकार से सभी को कुछ न कुछ आशाएं हैं, उम्मीदें हैं। भाजपा हिन्दुत्व के अपने मूल मुद्दे से हटने के कारण चुनाव हारी। कांग्रेस के नेतृत्व वाली संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार से बहुत आशा नहीं की जा सकती। इस सरकार के मंत्री ही इस सरकार के स्थायित्व में सबसे बड़ी बाधा हैं। जिस दिन वाममोर्चा चाहेगी सरकार को गिरा देगी। अत: गठबंधन सरकार को विरोधाभास से बचना होगा। सरकारें आईं और गईं। धर्म निरपेक्षता एक भ्रमजाल है। आज तक इसे परिभाषित नहीं किया गया। स्वच्छ और धर्म निरपेक्ष छवि वाली इस सरकार से आशा की जा सकती है कि वह वादे पर खरा उतरे। नयी सरकार जन साधारण के हितों में कार्य करेगी, तभी कार्यकाल पूरा कर सकती है। लाकेतंत्र को बचाने के लिए शिक्षा और चारित्रिक विकास की आवश्यकता है। उम्मीद है कि यह सरकार रोजगारोन्मुखी उद्योगों की स्थापना करेगी।

जनसत्ता के स्थानीय सम्पादक **श्री शैलेन्द्र** ने कहा- आज के दौर में किसी एक पार्टी की सरकार बनने की गुंजाइश पूरी तरह से खत्म हो चुकी है। अब बहुदलीय सरकार ही बनेगी और अपना कार्यकाल पूरा करेगी। इस सच्चाई को स्वीकार करते हुए कांग्रेस ने गठबंधन की राजनीति को अपना या इस समय की जरूरत माना। इस वजह से उसे चुनाव में कामयाबी

मिली। धर्म निरपेक्षता के मुद्दे पर वामपंथी दलों के लगातार संघर्ष की वजह से कुछ राज्यों में कांग्रेस के साथ तालमेल कर चुनाव लड़ने का उसे लाभ भी मिला। मुद्दों के आधार पर वामपंथी दलों का बाहर से समर्थन है इसीलिए उम्मीद की जानी चाहिए कि नई सरकार जन विरोधी कोई कदम नहीं उठाएगी। गत सरकार आर्थिक मामलों की गलत नीतियों के कारण यह चुनाव हार गई। केवल हिन्दुत्व व विकास की बात करके चुनाव नहीं जीता जा सकता। पिछली सरकार कुछ लोगों को ही खुश कर पाई और गरीबी व मध्यमवर्ग के बजट खातों में ब्याज दरों की कटौती कर आघात किया। इसको यह सरकार न दोहराए। नई सरकार को लोगों की बुनियादी सुविधाओं के बारे में सोचने व कुछ ठोस करने पर ध्यान देना होगा। इसे गांव के बारे में सोचना होगा, बिजली व सिंचाई की व्यवस्था करनी होगी।

प्रभात खबर के सम्पादक **श्री ओमप्रकाश अश्क** ने कहा- मात्र ४० प्रतिशत वोट से सरकार चुनी जाती है। सरकार के चलने की तब तक आशा की जा सकती है जब तक इस गठबंधन के दलों को भय है कि भाजपा वापस न आ जाए। आमतौर पर नयी सरकार पुरानी व्यवस्थाओं को आरोपित करते हुए नकारात्मक रुख अख्तियार करती है। नई सरकार को चाहिए कि वह अपना कार्यक्रम स्थापित करें। पिछली सरकार जनता की नब्ज और भीतरी आक्रोश को भांप नहीं पाई। आमजन से जुड़े मुद्दों पर कार्य करने वाली सरकार ही चलेगी। विकास का दावा तो अटल बिहारी भी कर रहे थे पर हार गए। आंध्र के पूर्व मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने अच्छा काम किया पर हार गए। इसका कारण इन लोगों द्वारा आम जनता से जुड़े कार्यों व मुद्दों से दूर रहना है। वहीं बिहार में लालू प्रसाद और पश्चिम बंगाल में वाममोर्चा की सरकारें काफी समय से चल रही हैं, क्योंकि इन्होंने जनता की नब्ज पकड़ ली है। भाजपा के शासन काल में २० प्रतिशत लोगों के लिए तो काम हुआ परन्तु ८० प्रतिशत जनता विकास से दूर रही। इस सरकार में एक मोरचा ऐसा है जो सरकार को निर्देश देने की स्थिति में है। इसके बावजूद धर्म निरपेक्षता के मुद्दे पर इस सरकार के सभी घटक सरकार को पांच वर्ष तक चलाना चाहेंगे। इसलिए सरकार के स्थायित्व पर कोई संदेह नहीं है।

छपते-छपते के सम्पादक **श्री विश्वम्भर नेवर** ने कहा- लोकतंत्र के नतीजे बहुत चौकाने वाले नहीं हैं। साढ़े चार साल तक भाजपा गठबंधन ने लोकतंत्र का मजाक बना के रखा। लखनऊ साड़ी काण्ड से पता चलता है कि देश में ४० रुपये की साड़ी के लिए ४० महिलाएं जान दे सकती है। नई सरकार को जनता की भावनाएं समझनी होगी। राजमार्ग बनाने, सैन्य बल बढ़ाने और बड़े-बड़े सपने दिखाने से सरकार नहीं चलती। यही सब गलतियां पिछली सरकार ने की थी। २०१५ तक भारत को शक्तिशाली राष्ट्र बनाने का दावा करने वाली सरकार अपने किए के कारण चुनाव के पहले ही मजाक का कारण बनीं। जनता को मौलिक सुविधाएं चाहिए, क्योंकि इसके बिना कुछ नहीं होगा। जनता के पास अपना बैरोमीटर है और वह उसके हिसाब से ही फैसला करती है। इसलिए सरकार को चाहिए कि वह आर्थिक विकास के लिए ऐसे कदम उठाए जिससे जनता को त्वरित लाभ मिल सके। विकास का मापदण्ड अलग-अलग होता है। एक गरीब ग्रामीण विकास को अपनी नजर से देखता है। बेहतरीन गाड़ियां, विदेशी कम्पनियों का पूंजी निवेश विकास के कार्य हो सकते हैं, लेकिन इसका लाभ गरीब को नहीं मिलता। सरकार को चाहिए कि वह गरीब के हितों के लिए शीघ्र कार्य योजना हाथ में ले। ऐसा नहीं हुआ तो 'फील गुड' और 'इंडिया शाइनिंग' की तरह नई सरकार की हवा निकल सकती है। सरकार कितने दिन चलती है उससे भी बड़ी बात है कि सरकार किस तरह चलती है।

विचार गोष्ठी का संचालन उपाध्यक्ष **श्री सीताराम शर्मा** ने किया। स्वागत भाषण महामंत्री **श्री भानीराम सुरेका** ने एवं धन्यवाद ज्ञापन उद्योगपति **श्री हरिप्रसाद बुधिया** ने किया।

संगोष्ठी में शिरकत करने वालों में प्रमुख थे

सर्वश्री ***इंद्रचंद संचेती, गौरीशंकर कायां, विश्वनाथ गुप्ता, नवरतनमल सुराणा, ताराचंद पाटोदिया, प्रेमचंद सुरेलिया, सांवरमल अग्रवाल, केदारमल भंवर, चिरंजीलाल अग्रवाल, शिवशंकर खेमका, आत्माराम सोंथालिया, रामकृष्ण शर्मा, नरेन्द्र सिंहानिया, ओम लड्ढिया, बाबूलाल अग्रवाल, नरेन्द्र तुलस्यान, बल्लभ नागोरी, रामस्वरूप तुलस्यान, गोपाल टिबड़ेवाल, नवल केडिया, बालकृष्ण माहेश्वरी, गोविन्द प्रसाद शर्मा, बंशीलाल बाहेती, घनश्याम शर्मा, राधेश्याम रेणुवा, जयगोविन्द इंदोरिया, हरिकृष्ण शर्मा, सुभाष गोयनका, अरुण केडिया, मदनलाल जोशी*** आदि।

पत्रकारों की संगोष्ठी में उपस्थिति का अंश

कोलकाता : सम्मेलन पदाधिकारियों ने मुख्य न्यायाधीश श्री लाहोटी को दी बधाई

सम्मेलन अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान, महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने न्यायमूर्ति श्री रमेशचंद्र लाहोटी के उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश बनने पर अपनी खुशी जाहिर करते हुए सम्मेलन द्वारा उन्हें प्रेषित बधाई पत्र में कहा कि समाज के लिए यह अति गौरव की बात है। समाज इससे धन्य हुआ है। मारवाड़ी समाज की परम्परा के अनुसार माननीय न्यायमूर्ति श्री लाहोटी ने सबसे पहले अपनी मां के पैर छुए इससे मारवाड़ी समाज अपने को गौरवान्वित महसूस करता है। पदाधिकारियों ने बधाई पत्र में उनके दीर्घायु की कामना करते हुए कहा कि वे इसी तरह देश की सेवा करते रहें।

राष्ट्रपति भवन में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और भारत के मुख्य न्यायाधीश के पद की शपथ लेने आये न्यायाधीश आर.सी. लाहोटी।

न्यायमूर्ति लाहोटी ने भारत के प्रधान न्यायाधीश की शपथ ली

नई दिल्ली। न्यायमूर्ति रमेश चन्द्र लाहोटी को राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की शपथ दिलाई। राष्ट्रपति भवन के अशोक हाल में आयोजित समारोह में प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह, उनके मंत्रिमंडल के सदस्य और कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी के अलावा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। शपथ लेने के बाद न्यायमूर्ति लाहोटी ने अपनी मां के पैर छुए। बाद में उन्होंने प्रधानमंत्री और अन्य विशिष्ट व्यक्तियों से हाथ मिलाया। न्यायमूर्ति लाहोटी उच्चतम न्यायालय के सबसे वरिष्ठ न्यायाधीश हैं। वह न्यायमूर्ति एस. राजेन्द्र बाबू का स्थान लेंगे जो एक माह इस पद पर रहने के बाद सेवानिवृत्त हो गए। डा. कलाम, डा. सिंह और न्यायमूर्ति लाहोटी ने एक साथ चित्र खिंचाया। न्यायमूर्ति लाहोटी उच्चतम न्यायालय के ३५वें मुख्य न्यायाधीश हैं। मध्य प्रदेश के रहने वाले न्यायमूर्ति लाहोटी दिसम्बर १९९८ में उच्चतम न्यायलय के न्यायाधीश बने थे।

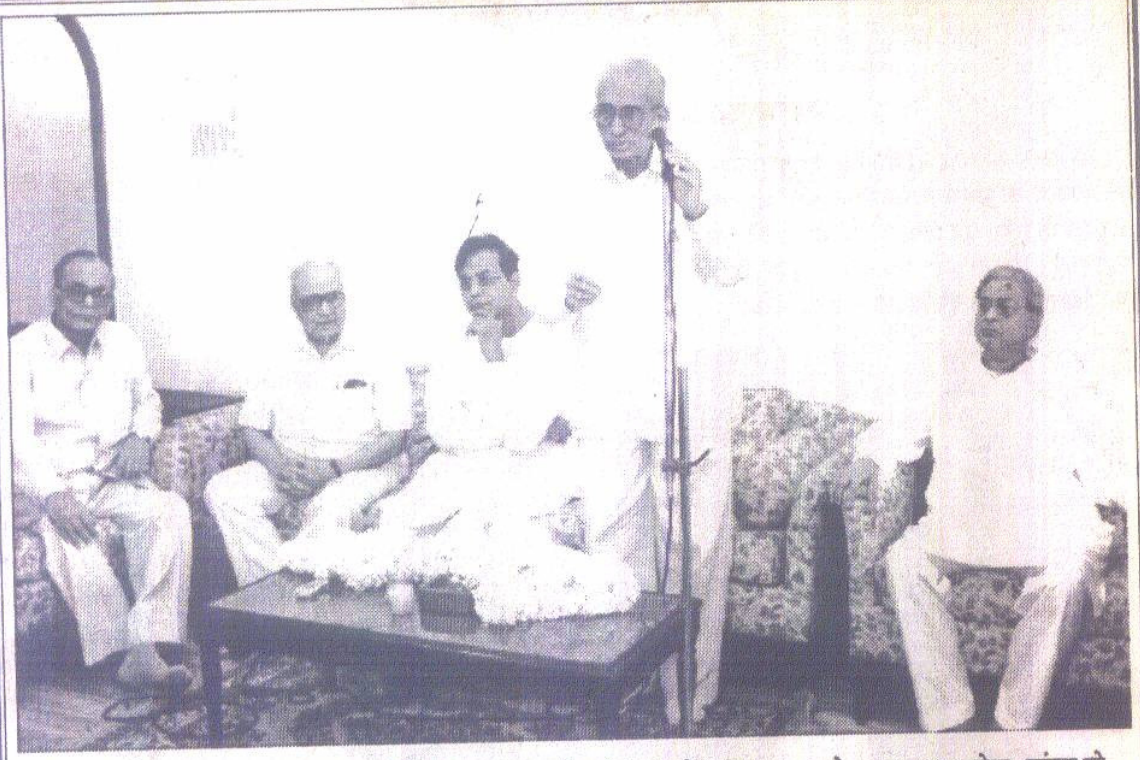

मो. सलीम के सम्मान में आयोजित भोज एवं सम्मान समारोह में बायें से श्री छोटुलाल नाहटा, प्रो. कल्याणमल लोढ़ा, सांसद मो. सलीम, श्री दीपचंद नाहटा (भाषण देते हुए) एवं श्री सीताराम शर्मा।

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन

नौगांव शाखा : कार्यकारिणी सभा सम्पन्न

१६.५.२००४ को पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन नगांव शाखा की कार्यकारिणी सभा का आयोजन अध्यक्ष श्री बजरंगलाल नाहटा की अध्यक्षता में किया गया। पूर्व अध्यक्ष श्री प्रह्लादराय तोदी एवम् निवर्तमान अध्यक्ष श्री संतलाल बंका भी उपस्थित थे। सचिव श्री अनिल शर्मा द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात भावी कार्यक्रमों के विषय में विचार-विमर्श किया गया और सदस्यता की नवीनीकरण तथा नये सदस्य बनाने पर जोर दिया गया। सर्वश्री प्रह्लादराय तोदी, ज्योतिप्रसाद खदड़ीया, विजय कुमार मंगलुनिया, माणकचंद नाहटा, डुगरमल बगड़ीया, खेतुलाल तोदी, शंकरलाल बालासुरीया, सुरेन्द्र कर्वा, प्रह्लादराय मित्तल, शंकरलाल चौधरी ने भी सम्मेलन के आगे की कार्ययोजना तथा समाजसुधार विषयों पर अपने-अपने विचार रखें। सभा में काफी संख्या में सदस्य उपस्थित थे।

उत्कल प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन

युवा मंच की १५वीं प्रान्तीय सभा की बैठक सम्पन्न

युवा मंच के 'कार्यशाला' के प्रान्तीय संयोजक श्री राजेश अग्रवाल ने जानकारी दी कि उत्कल प्रान्तीय मारवाड़ी युवा मंच की दो दिवसीय सप्तम् प्रान्तीय कार्यकारिणी की द्वितीय बैठक एवं पंचदशम् प्रान्तीय सभा की बैठक भटली शाखा के अतिथ्य में भारी सफलता सह सम्पन्न हुई। अध्यक्षता प्रान्तीय अध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल ने की। प्रान्तीय महामंत्री श्री जयप्रकाश लाठ ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। सभा में आने वाले वर्ष हेतु जनसेवा तहत समाज व राष्ट्र को मजबूत करने पर चर्चा की गई तथा अन्य संवैधानिक प्रक्रिया पूर्ण की गई। अग्रवाल ने शाखा व सदस्यों को सक्रियता हेतु पुरस्कारों का वितरण किया गया बताया। संगठन रूपी मंच को मजबूती, नेतृत्व में नई शक्ति का संचार, सदस्यों का मंच

के बारे में जानकारी व प्रशिक्षु से व्यक्तिगत जीवन में नया परिवर्तन हेतु प्रान्तीय सभा में प्रान्त स्तरीय कार्यशाला आयोजित की गई। जिसका संचालन राष्ट्रीय महामंत्री श्री पुरुषोत्तम शर्मा, राष्ट्रीय संयुक्तमंत्री श्री राजकुमार मुदड़ा एवं रा.का. सदस्य व पूर्व प्रान्तीय अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश तुलस्यान ने किया। बैठक में प्रान्तीय पदाधिकारी व प्रान्तीय कार्यकारिणी समिति के सदस्यगण एवं प्रान्त की सभी शाखाओं के अध्यक्ष व मंत्री तथा प्रान्तीय सभा सदस्य उपस्थित थे।

अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन

जूनागढ़ शाखा : अध्यक्ष की घोषणा

महिला समिति की जूनागढ़ शाखा के लिए सत्र २००४-०६ के लिए श्रीमती जामोती देवी अग्रवाल को अध्यक्षा के रूप में चुना गया। श्रीमती कोमल अग्रवाल को मंच का सचिव एवं श्रीमती कांतादेवी बंसल कोषाध्यक्ष चुनी गई। श्रीमती आशा देवी खेमका मंच की वरिष्ठ सदस्य मनोनीत की गईं। नव-निर्वाचित अध्यक्षा ने २००४ सत्र में अपने निर्धारित कार्यक्रमों का प्रारम्भ करते हुए गायत्री परिवार ट्रस्ट के साथ मिलकर नि:संतान दम्पतियों के इलाज हेतु नि:शुल्क चिकित्सा शिविर लगवाया जिसका सफलतापूर्वक आयोजन हुआ। नवनिर्वाचित समिति ने गर्मियों में जूनागढ़ में अस्थायी प्याऊ का भी प्रबंध किया। समिति के सहयोग से जूनागढ़ स्थित गायत्री मंदिर परिसर में चार सिलाई मशीन का उद्घाटन किया गया। समिति की एक बैठक में यह तय किया गया कि भविष्य में भी यह संगठन समाज व महिलाओं के विकास में तत्पर रहेगा एवं देश भर की शाखाओं से सम्पर्क रखेगा।

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच

हसनपुर रोड शाखा : मासिक प्रगति विवरण

मारवाड़ी युवा मंच की बिहार प्रांत के हसनपुर रोड शाखा क्षेत्र (ख) से प्राप्त मासिक प्रगति विवरण अप्रैल-मई २००४ के अनुसार शाखाध्यक्ष श्री राजीव ड्रोलिया एवं शाखामंत्री श्री नीरज बड़बड़िया ने प्रशासनिक व सांगठनिक विवरण में बताया कि सदस्यों की कुल संख्या ५२ है। दिनांक ४ मई को साधारण सभा और २९ मई को शाखा कार्यकारिणी की बैठकें हुईं। नवनिर्वाचित अध्यक्ष एवं मनोनीत उपाध्यक्ष, सचिव एवं अन्य पदाधिकारियों को शपथ ग्रहण कराया गया।

कांटाबाजी शाखा पुरस्कृत

उत्कल प्रांतीय मारवाड़ी युवा मंच की १५वीं प्रांतीय सभा भटली में सम्पन्न हुई। सभा में अन्य कार्यक्रमों के अलावा सत्र २००३-०४ हेतु वार्षिक पुरस्कार भी प्रदान किये गये। मंच की कांटाबांजी शाखा व कांटाबांजी मिड टाउन (महिला) शाखा को सत्र २००३-०४ हेतु शाखा स्तरीय विशिष्ट शाखा पुरस्कार प्रदान किया गया एवं कांटाबांजी शाखा को सत्र २००३-०४ हेतु सर्वोत्तम जनसेवा कार्यक्रम के तहत् शाखा कार्यक्रम व सर्वोत्तम जनसम्पर्क कार्यक्रम और दानपत्र हेतु विशेष सहभागिता पुरस्कार दिए गए। व्यक्तिगत पुरस्कारों में कांटाबांजी शाखा के तत्कालीन शाखामंत्री श्री संदीप गर्ग को सर्वश्रेष्ठ शाखा मंत्री का पुरस्कार दिया गया। निवर्तमान शाखाध्यक्ष श्री नारायण अग्रवाल ने सभी राष्ट्रीय, प्रांतीय व शाखा पदाधिकारियों का आभार जताते हुए शाखा के सभी सदस्यगणों को सहयोग प्रदान हेतु धन्यवाद ज्ञापन किया। वर्तमान शाखाध्यक्ष श्री आशीष अग्रवाल व शाखामंत्री श्री आनन्द अग्रवाल ने शाखा को प्रांतीय स्तरीय पुरस्कार प्राप्त होने पर खुशी जाहिर करते हुए सभी सदस्यों को बधाई दी।

अन्य संस्थाएं

कोलकाता : नि:शुल्क पुस्तक वितरण समारोह

६ जून २००४ को भारत रिलीफ सोसाइटी एवं प्रभा खेतान फाउण्डेशन के संयुक्त तत्वावधान में नि:शुल्क पुस्तक वितरण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें धर्म एवं जातीयता के बन्धन तोड़कर १००० हिन्दू मुस्लिम गरीब छात्र-छात्राओं को उनकी पाठ्य पुस्तकें प्रदान की गई। समारोह का उद्घाटन करते हुए वाममोर्चा के अध्यक्ष श्री विमान बोस ने कहा कि पुस्तकें बांटना अच्छा काम है लेकिन उन पुस्तकों के अध्ययन के लिए समय निकालना उससे भी आवश्यक है।

साक्षरता की दर आज ६९.२२ प्रतिशत से बढ़कर ७०.२२ प्रतिशत हुई है। भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान सौरभ गांगुली की पत्नी और विख्यात नृत्यांगना डोना गांगुली ने बच्चों में पुस्तकें वितरित की। भारत रिलीफ सोसायटी के प्रधान सचिव श्री विश्वम्भर नेवर ने कहा कि संस्था की स्थापना १९८५ में हुई थी। इस वर्ष एक हजार विद्यार्थियों को पुस्तकें देने का कार्यक्रम है। ९वीं और १०वीं कक्षा के छात्रों के लिए नि:शुल्क कोचिंग केन्द्र एवं असहाय लोगों के लिए नि:शुल्क चिकित्सा व्यवस्था भी की गयी है। संस्था के अपने दो चलायमान अस्पताल हैं जहां नि:शुल्क सेवाएं प्रदान की जाती है। कार्यक्रम का संचालन श्री लालसेन गुप्ता ने एवं धर्म्यवाद ज्ञापन सोसायटी के अध्यक्ष श्री चुन्नीलाल सोमानी ने किया। समारोह में प्रभा खेतान फाउण्डेशन ट्रस्ट के ट्रस्टी सर्वश्री संदीप भूतोड़िया, उद्योगपति शिशिर बाजोरिया, पार्षद शमीम अनकवर, साधुराम बंसल, परमानंद गोयल, चिरंजीलाल अग्रवाल, बाबूलाल मूंधड़ा, जगदीशचन्द्र एन. मूंदड़ा आदि अनेकों गणमान्य सज्जन उपस्थित थे।

सम्बलपुर : संजीवनी में नि:शुल्क सेवा प्रकल्प

भारत विकास परिषद, सम्बलपुर शाखा द्वारा केवल आर्थिक रूप से दुर्बल लोगों के लिए 'संजीवनी' नामक एक पारिवारिक चिकित्सालय का संचालन किया जा रहा है। नि:शुल्क सेवा प्रकल्प के तहत इसमें गरीब व्यक्ति के लिए एक बिस्तर, चिकित्सक की फी, नशा के डाक्टर की फी व शल्य चिकित्सा फी नि:शुल्क है।

बेलममपल्ली : माहेश्वरी समाज ट्रस्ट द्वारा श्री महेश नवमी महोत्सव आयोजित

आदिलाबाद में श्री महेश नवमी महोत्सव माहेश्वरी समाज द्वारा धूमधाम से मनाया गया। भगवान महेश का पूजन श्री श्रीकिशनजी मारू ने किया। संचालन श्री दीनेश सारडा ने किया। आदिलाबाद जिले के अध्यक्ष श्री रामनारायण सारडा ने जानकारी दी कि जिले में ३१० परिवार हैं, जहां लड़के १०० हैं वहां लड़कियां ५० ही है। लड़कियां डीग्री प्राप्त करते समय तक २० से २५ वर्ष की हो रही है। इस पर माता-पिता को ध्यान देना जरूरी है। उन्होंने माहेश्वरी भवन निर्माण की पूरी जानकारी दी। श्री नन्दलालजी लाहोटी, श्री राधाकिशन लोया, श्री श्रीकिशन मारू, श्री सत्यनारायण सारडा ने अपने विचार रखें।

With Best Compliments From :

SARAD INDUSTRIAL PRODUCTS

4, Synagogue Street
Kolkata- 700001

Phone No. : 2242 2585, 2242 4654
Fax No. : 2242-2749
E Mail No. rohitashwaj@hot mail.com

Authorised Distributor

HUNSTMAN ADVANCE METERIALS INDIA PVT. LTD.

FOR
ARALDITE - ARASEAL & ARAVITE

REGISTERED Postal Registration No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2004-06 SAMAJ VIKAS - JUNE 2004 RNI Regd. No. 2868/68

भारतीय लोकसभा के अध्यक्ष श्री सोमनाथ चटर्जी का अभिनन्दन

समारोह में उपस्थित पश्चिम बंगाल के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री ज्योति बसु को राजस्थान पगड़ी से अभिनन्दित करते हुए सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका

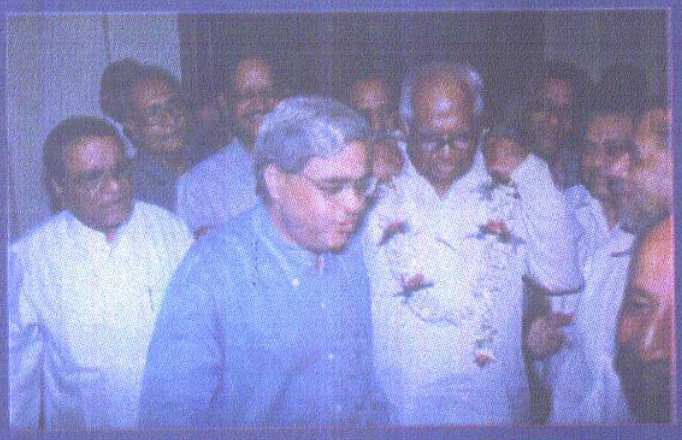

सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा उनका माल्यार्पण करने के बाद विचार-विमर्श में संलग्न

From :
All India Marwari Federation
152B, M.G. Road, Kolkata-7
Phone : 2268-0319

To,